REVELATION 14 SERIES, STUDIES #46 THRU #50, by Chris McCann-Hindi

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक **#46 - #50** क्रिस मॅकन – हिन्दी

Revelation 14 Series, Study #46 by Chris McCann, originally aired October 14, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 46, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 14 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 46 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:17–19 पढेंगे :

फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला, जो स्वर्ग में है, और उसके पास भी चोखा हंसुआ था। फिर एक और स्वर्गदूत जिस आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगा कर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है। और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृथ्वी की दाख लता का फल काट कर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया।

मैं यहाँ पढ़ना बन्द करता हूँ। हमें बताया गया है कि यह 'एक और स्वर्गदूत' या 'एक और संदेशवाहक' है। प्रथम जो पद 15 में मन्दिर से निकला, उसने ऊँचे स्वर से पुकारकर उसे कहा जो बादलों पर बैठा था, ''अपना हँसुआ लगाकर लवनी कर।'' वह संदेशवाहक प्रभु यीशु मसीह थे और जो बादलों पर बैठा था, वह मनुष्य का पुत्र अर्थात् मसीह ही है। यहाँ परमेश्वर अपने ईश्वरत्व में ही आज्ञा दे रहे हैं, और यही स्थिति यहाँ प्रकाशित वाक्य 14:17–18 में भी है :

फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला, जो स्वर्ग में है, और उसके पास भी चोखा हंसुआ था। फिर एक और स्वर्गदूत जिस आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगा कर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है।

स्वर्गदूतों के ये सभी संदर्भ वास्तव में स्वयं परमेश्वर की ओर संकेत करते है। हम जान सकते है कि वह स्वर्गदूत जो दूसरे स्वर्गदूत को हँसुआ लगाने और पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे काटने के लिये कहता है, वह स्वयं परमेश्वर है क्योंकि वे आज्ञा दे रहे हैं; केवल परमेश्वर ही है जिनका नियंत्रण है और इस संसार के न्याय का पूरा अधिकार उनके पास है। स्वर्गदूतों के पास अधिकार (उस प्रकार के) नहीं है। उन्हें उस प्रकार की सामर्थ नहीं दी गई है। केवल परमेश्वर को ही इस प्रकार की सामर्थ और अधिकार है।

तब आगे 18 पद में लिखा है, ''फिर एक और स्वर्गदूत, जिसे आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला'', अब चूंकि यह संदेशवाहक वेदी में से निकल रहा है, यह यीशु की ओर संकेत करता है, क्योंकि वेदी प्रभु यीशु मसीह को दर्शाती है। नये–नियम में मूल ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद 'वेदी' है, वह स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 2380 है, और यह उस ग्रीक शब्द से निकला है, जिसका अनुवाद 'बलिदान' किया गया है, यह स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 2379 है, यह उसी शब्द से आता है; 'वेदी' और 'वेदी पर रखा बलिदान' दोनों इस अर्थ में एक ही बात को दर्शाते है। प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का मेम्ना और बलिदान है। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि मसीह ही बलिदान है, परन्तु उसे 'वेदी' के रूप में भी समझा गया है, जिस पर बलिदान रखा जाता है। इब्रानियों 13:10 में लिखा है :

हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं।

हम परमेश्वर के लोगों के पास एक 'वेदी' है। मसीह हमारी वेदी है, और यही वह वेदी है जिसका उल्लेख प्रकाशितवाक्य 6:9 में किया गया है :

और जब उस ने पांचवी मुहर खोली, तो मैं ने वेदी के नीचे उन के प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन के कारण, और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे।

वे क्यों वेदी के नीचे हैं? क्योंकि वे यीशु के लोहू से ढ़ाँके गये है। मेम्ना वेदी पर रखा जाता है और याजक बलिदान के पशु का वध करते हैं, और लोहू की बूंदें वेदी से नीचे गिरती (टपकती) है। परमेश्वर के लोग 'वेदी के नीचे' है, इस प्रकार वे मसीह के लोहू में है। मसीह के लोहू ने हमारे पापों को धोया और हमें हर एक अशुद्धता से शुद्ध किया है और हमारे विषय में कहा गया है कि हम मसीह के आधीन या वेदी के नीचे है। प्रकाशितवाक्य 8:3–5 में लिखा है :

फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिये हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उस को बहुत धूप दिया गया, कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ उस सोनहली वेदी पर जो सिंहासन के साम्हने है चढ़ाए। और उस धूप का धुआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के साम्हने पहुंच गया। और स्वर्गदूत ने धूपदान ले कर उस में वेदी की आग भरी, और पृथ्वी पर डाल दी, और गर्जन और शब्द और बिजलियां और भूईंडोल होने लगा॥

यह आरम्भ की भाषा है, जो आने वाली पदों में "एक तिहाई पर" परमेश्वर के न्याय का वर्णन करती है। परमेश्वर के क्रोध की तस्वीर वेदी से आग लेकर धूपदान में 'जलते कोयले' भरने के द्वारा दिखाई गई है। वेदी की पहिचान आग से की गई है। वेदी पर

बलिदान रखा जायेगा, उसे मारा जायेगा और जलाया जायेगा, यह परमेश्वर के क्रोध की तस्वीर है। स्वयं परमेश्वर को एक 'भस्म करने वाली आग' कहा गया है और वेदी पर रखा बलिदान का पशु वेदी की आग से भस्म हो जायेगा, यही कारण है कि प्रकाशितवाक्य 14:18 में हम यह भाषा पाते हैं, जिसका संबंध इस स्वर्गदूत से है :

"फिर एक और स्वर्गदूत वेदी में से निकला....

अब तक के सभी स्वर्गदूत मसीह ही थे, इस कारण हमें निश्चय है कि यह स्वर्गदूत भी मसीह है, परन्तु यह तथ्य कि वह वेदी में से निकला, इसे प्रमाणित करता है क्योंकि वेदी की पहिचान हम पूर्ण रूप में मसीह से करते हैं। तब आगे प्रकाशितवाक्य 14:18 में कहा गया है :

... जिसे आग पर अधिकार था...

यहाँ ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद 'अधिकार' किया गया है, वह स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 1849, exousia (एक्सोसिया) है, और इसका सही अनुवाद 'सामर्थ' या 'अधिकार' है। इस कारण संदेशवाहक को आग पर अधिकार है और यह वास्तव में प्रमाण है कि वह प्रभु यीशु मसीह ही होना चाहिये, जो वेदी से निकल रहे संदेशवाहक है, क्योंकि मसीह वह मेम्ना थे जो जगत की उत्पत्ति से पूर्व वध किया गया था – वे अपने लोगों के पापों के लिये इस जगत से पहले ही वध हुये और यह ऐसा था मानो वे वेदी पर रखे गये और वध किये गये। परमेश्वर ने उन्हें वध किया, यह ऐसा था मानों परमेश्वर के क्रोध ने उन्हें भस्म कर दिया। परन्तु वे मृतकों में से जी उठे। वे मृत्यु पर जयवन्त हुये। वे बलिदान थे जो पुर्नजीवित हुये और इस कारण परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी की सभी वस्तुओं पर सामर्थ और अधिकार दिया। और वे आग पर भी अधिकार रखते है। उन्होंने परमेश्वर के क्रोध पर पुर्नजीवित होने के द्वारा, मृतकों में से जी उठकर जय प्राप्त की, और परमेश्वर हमें इस अधिकार के बारे में जो पुत्र को दिया गया था, यूहन्ना 5:26–27 में बताते है :

क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे। वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है।

परमेश्वर ने अधिकार दिया और यहाँ भी ग्रीक शब्द "exousia" है, जिसका अनुवाद 'अधिकार' है। परमेश्वर ने उसे न्याय करने का अधिकार दिया, और बाईबल में आग परमेश्वर के क्रोध या न्याय की तस्वीर है, जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 14:10 में पढ़ते है :

तो वह परमेश्वर का प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा।

एक बार फिर कहूंगा, परमेश्वर के क्रोध का संबंध 'आग' से है। बाईबल मसीह को 'पलटा लेने वाली धधकती आग' में पृथ्वी के उद्धार न पाए हुओं पर आने के विषय में कहती है, इस कारण यह 'स्वर्गदूत' प्रभु यीशु है और उन्हें ''आग'' पर अधिकार है।

इसके पहले कि हम आगे बढ़ें, मैं प्रकाशितवाक्य के अध्याय 10 के संबंध में आग के विषय में एक बात और कहना चाहूंगा। यह अध्याय प्रभु द्वारा कही गयी तीन हाय के विवरणों के बीच का अध्याय है। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 8 के अंत में प्रभु कहते है – ''पृथ्वी के रहने वालों पर हाय, हाय, हाय'', क्योंकि पहली चार तुरहियाँ, कलीसियाओ और मंडलियों पर न्याय से पहचान रखती है और अंतिम तीन तुरहियाँ समस्त संसार के न्याय से संबंधित है। प्रत्येक 'हाय' का संबंध अंतिम तीन तुरहियों से है – पाँचवी, छटवीं और सातवीं तुरही। प्रकाशितवाक्य अध्याय 9 में न्याय के दिन की 'हाय' का वर्णन है और तब एक अर्थ में प्रकाशितवाक्य 9 एक मध्यान्तर है, और तब परमेश्वर प्रकाशितवाक्य 10 देते हैं, पर यह उन तीन हाय के संबंध में परमेश्वर के विवरणों के बीच में है। तब प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 में परमेश्वर दूसरी हाय के गुजर जाने और तीसरी हाय के शीघ्र आने के विषय में कहेंगे। इस कारण हम आश्चर्य करते हैं, क्यों प्रकाशितवाक्य 10 दिया गया है? हमने इस अध्याय का अध्ययन किया है और हमने देखा कि परमेश्वर के न्याय की उद्घोषणा करना परमेश्वर की योजना थी, जहाँ वे अंतिम पद प्रकाशितवाक्य 10:11 में कहते है :

ब मुझ से यह कहा गया, कि तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं पर, फिर भविष्यद्ववाणी करनी होगी॥

हमने सावधानी पूर्वक इन बातों का विचार किया है और हम समझते हैं, परमेश्वर के लोगों को न्याय के दिन में परमेश्वर की यह आज्ञा है कि उन्हें परमेश्वर के वचन से जो जानकारियाँ मिले, उसकी उद्घोषणा करे। यह 'कड़वी' जानकारी होगी, अर्थात् यह जीवन के जल का सोता नहीं होगी कि लोग उन्हें सुनें और उद्धार प्राप्त करे, परन्तु इनमें बेबीलोन के पतन की घोषणा होगी और एक बार फिर संसार का न्याय किये जाने की घोषणा होगी।

मैं यह बताना चाहता था, क्योंकि जब मैं प्रकाशितवाक्य के अध्याय 14 में शब्द 'आग' पर विचार कर रहा था, तब मैंने एक रोचक बात का संदर्भ देखा, जो पहले प्रकाशितवाक्य 10:1 में नहीं देखा था।

फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर मेघधनुष था: और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के खंभे के से थे।

हम किसी अन्य निष्कर्ष पर नहीं जा सकते, केवल यह कि यहाँ यीशु मसीह के विषय में कहा गया है, विशेषकर, जब हम प्रकाशितवाक्य 14 में बहुत से स्वर्गदूतों का प्रगटीकरण

देखते हैं। यहाँ प्रकाशितवाक्य 10:1 में प्रेरित यूहन्ना ने **बली स्वर्गदूत** को देखा। और जब हम पढ़ते हैं – ''उसके सिर पर इंद्रधनुष था और उसका मुख सूर्य के समान था", हम जानते हैं कि सूर्य परमेश्वर की ओर संकेत करता है, और मसीह को आत्मिक रूप में 'आकाश में सूर्य' भी बताया गया है, और अन्य कोई वैसा नहीं है, इसलिये यह प्रमाणित होता है कि परमेश्वर स्वयं को एक स्वर्गदूत के रूप में बता रहे हैं – और यहाँ एक " **बली स्वर्गदूत**।

इस पद के अंत में यह भी कहा गया है कि उसके पाँव 'आग के खम्भे' के समान थे। जब हमने इस पद पर पहले विचार किया था, तब हमने देखा कि मसीह कैसे न्याय की आग में से होकर गये, और यही कारण है कि मैंने कहा था कि उसके पाँव आग के खम्भे के समान बताये गये है। परन्तु अब हम अधिक स्पष्ट रूप में देखते हैं कि यह परमेश्वर की योजना थी कि वह अपने लोगों को न्याय के दिनों में फसल की कटनी के लिये भेजे। यह बात प्रकाशितवाक्य 10:11 में दी गयी आज्ञा से सहमत है, "तुझे फिर भविष्यवाणी करनी होगी", यह यिर्मयाह 50 के साथ भी तालमेल रखती है, जहाँ आज्ञा दी गई कि – "सुनाओ, मत छिपाओ कि बेबीलोन ले लिया गया।" इस अध्याय के बिल्कुल आरम्भ में ही हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के पाँव 'आग के खम्भे' जैसे हैं, और जब मैं अध्ययन कर रहा था, मुझे तब ही सोचना चाहिये था कि यहाँ परमेश्वर अपने पाँवों के विषय में इस प्रकार बता रहे हैं, जो उनके चुने हुओं से पहिचान रखता है। स्मरण करे कि रोमियों 10:15 में लिखा है :

और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उन के पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।

हम समझते हैं कि परमेश्वर के लोगों के पाँव कितने सुहावने हैं जो सुसमाचार लेकर जाते और संसार में बीज बोते हैं, परन्तु यह पद यशायाह 52:7 से लिया गया है :

पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता हे, तेरा परमेश्वर राज्य करता है।

अब यह पदें शब्द रचना में भी एक जैसी हैं, केवल ''उसके पाँव कितने सुहावने हैं'' के स्थान पर ''पहाड़ों पर उनके पाँव क्या ही सुहावने है'' कहा गया है, क्योंकि उसका संदर्भ मसीह से है। जब यह पद रोमियों की पुस्तक (पत्री) में ली गई, तब 'उसके पाँव' को बदलकर 'उनके पाँव' किया गया। यहाँ बदलाव है, पर वास्तव में बात वही है क्योंकि वे लोग जो संसार में सुसमाचार लेकर जाते हैं, वे मसीह की देह है; आत्मिक रूप में, हम मसीह की देह के अंग है। वह सिर है और हम मानों पाँव हैं। जब परमेश्वर संसार में

सुसमाचार भेजते है, तब उसे लेकर जाने वाले उसके लोग है जो सुसमाचार के संदेशवाहक बनते हैं। परन्तु उसी के साथ–साथ परमेश्वर के दृष्टि में मानों मसीह स्वयं जा रहे हैं और वे ही उन बातों का प्रचार कर रहे हैं।

अब चूंकि यह समझा जाता है कि बाईबल हमें शांति का संदेश देने के लिए प्रोत्साहित करती है, हम यह भी समझते हैं कि उसमें न्याय का संदेश भी है, इस प्रकार यह प्रकाशितवाक्य 10 से काफी मेल खाता है, कि परमेश्वर हमें एक अन्य रूप में अधिकृत करने वाले है, (उस उद्धार का सुसमाचार देने के लिये नही, जिसमें कुछ लोगों ने सुना और उद्धार पाया) जिसमें परमेश्वर के न्याय के संदेश की घोषणा शामिल है। यह एक 'कड़वा' संदेश है, परन्तु हमें फिर से भविष्यद्वाणी करने की आज्ञा दी गई है, और प्रकाशितवाक्य के अध्याय 10 में परमेश्वर हमें शक्तिशाली स्वर्गदूत अर्थात् प्रभु यीशु को दिखाते है जिसके पास 'छोटी सी खुली हुई पुस्तक' है। यह पहले से खुली हुई है और उसके पाँव 'आग के खम्भे' है और वे सच्चे विश्वासीजन है जो परमेश्वर के क्रोध और न्याय का संदेश लेकर संसार में जाएंगे। क्योंकि अब कोई उद्धार नहीं है, यह केवल एक अग्निमय संदेश है। यह केवल न्याय का संदेश है।

Revelation 14 Series, Study #47 by Chris McCann, originally aired October 15, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 47, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 15 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 47 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:17–18 पढेंगे :

फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला, जो स्वर्ग में है, और उसके पास भी चोखा हंसुआ था। फिर एक और स्वर्गदूत जिस आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगा कर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है।

मैं यहाँ पर रूकुंगा। यहाँ पर कुछ शब्द रचना की भाषा में काफी समानता है, जो हमने इसके पहले पदों 15 और 16 में पढ़ी है। वास्तव में समानताएँ 2 है – 1) एक स्वर्गदूत या संदेशवाहक है, जो मसीह है; 2) आज्ञा दी गयी कि हँसिया लगाकर लवनी कर।

'हँसुआ लगाने' के लिये ग्रीक शब्द "pempo" (पेंम्पो) आया है, जिसका अकसर अनुवाद 'भेजने' के अर्थ में किया जाता है, जब परमेश्वर अपने संदेशवाहकों को भेजते है। हमने पुराने–नियम में शब्द 'हँसिया' भी देखा था, और पिछले अध्ययनों में हमने सीखा था कि

कैसे इसका संबंध उस हिब्रु शब्द चर्मपत्र या लेख पत्रों से है जिन पर बाईबल लिखी गई थी। यिर्मयाह 36 में परमेश्वर ने यिर्मयाह को प्रेरित किया कि उन सब बातों को लिखें जो यिर्मयाह की पुस्तक में है और बारूक नाम लेख लिखने वाले ने उन्हें एक पुस्तक में लिखा था। बाईबल का लेखन कार्य इसी प्रकार हुआ था। यह शब्द 'पत्र' इब्रानी के शब्द 'हँसिये' के अधिक निकट है, इस प्रकार परमेश्वर हमें 'चोखे हँसुए' का अर्थ समझने में सहायता कर रहे हैं। स्मरण रखें कि शब्द 'चोखे' का संबंध परमेश्वर के वचन से है, जैसा कि इब्रानियों 4:12 में भी लिखा है : ''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है।'' परमेश्वर कुछ स्थलों पर शब्द 'चोखे' का उपयोग अपने वचन का वर्णन करने के लिये करते हैं, और यहाँ 'चोखा हँसिया' है, जो पृथ्वी की फसल काटने लगाया गया है। यह कटनी में उपयोग होने वाला एक औजार है। परमेश्वर आज भी अपने वचन का उपयोग कर रहे हैं, पर यह वचन वह है जो न्याय के दिन के लिये विशेष तौर पर तैयार किया गया है, क्योंकि परमेश्वर का वचन सम्पूर्ण न्याय और सम्पूर्ण क्रोध का वचन है, क्योंकि यह 'प्रभु का दिन' है। वचन के द्वारा परमेश्वर की भेड़ों को भोजन मिलता है, परन्तु अब यह आवश्यक नहीं है कि वचन उद्धार के लिये कायल करे, क्योकि उन सब का उद्धार पहले ही हो चुका और इस कारण परमेश्वर के लोग पवित्रशास्त्र के सत्य से केवल पोषण पा रहे हैं, जो उन्हें न्याय के दिन में लगातार प्राप्त हो रहा है।

परन्तु शेष मानवजाति के लिये वह कटनी करने वाला क्रोध का चोखा हँसिया है। उनकी कटनी उनके विनाश के लिये की जा रही है और यहाँ वही तस्वीर दी गयी हैं। इसके अलावा, पद 17 और 18 में लगभग उसी भाषा को दोहराया गया है। यहाँ एक संदेशवाहक दूसरे संदेशवाहक को आज्ञा सुना रहा है, परन्तु वे दोनों ही स्वयं परमेश्वर है। प्रभु यीशु वहाँ समस्त पृथ्वी का न्याय करने वाले न्यायी है।

एक स्वर्गदूत वेदी से निकला, और हमने देखा कि कैसे 'वेदी' का संबंध 'मसीह' से है, और उसे आग पर अधिकार दिया गया है जैसे कि प्रभु यीशु मसीह को 'परमेश्वर के वचन' पर अधिकार मिला है। परमेश्वर ने उसे न्याय करने का पूरा अधिकार सौंपा है, और तब प्रकाशितवाक्य 14:18 में लिखा है :

फिर एक और स्वर्गदूत जिस आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगा कर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है।

पुनः, "हँसुआ लगाना" यह शब्द पद 18 में आया है, यह शब्द pempo है जिसका अनुवाद पद 15 में भी है, यह स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 3992 है, और केवल यहाँ उसका अनुवाद 'लगाना' है, अन्यथा अधिकतर 'भेजना' या 'भेजा' किया गया है। इस प्रकार परमेश्वर अपने

संदेशवाहकों को फसल काटने के लिये भेज रहे हैं, जैसे कि मत्ती 13:41–42 में कहा गया है :

मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे। और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा।

यह न्याय से संबंधित भाषा है, क्योंकि परमेश्वर उनके क्रोध की तस्वीर जरा अलग ढंग से रखते हैं। यहाँ 'आग की भट्ठी' है पर प्रकाशितवाक्य 14 में वह 'रसकुण्ड' है, पर दोनों तस्वीरें एक ही बात को सिखा रही है : पृथ्वी के उद्धार न पाये हुओं का विनाश!

प्रकाशितवाक्य 14:18 में पृथ्वी के उद्धार न पाये हुओं का वर्णन है, परन्तु पिछली पदों में, पद 15 में उस कटनी का उल्लेख है, जिसका महासंकट के दौरान कलीसियाओं और मण्डलियों में नाश हुआ। यहाँ कटनी की अपेक्षा यही पर ही की जानी चाहिए थी, परन्तु जैसे ही परमेश्वर ने कलीसियाई युग का अंत किया और अपनी आत्मा को वहा से हटा दिया, तब कटनी पूरी तरह से बर्बाद हो गई और सुख गई। उन्हें सिंचा नहीं गया। उनमें जड़ें नहीं जमी थी क्योंकि मसीह ने कलीसियाओं को त्याग दिया था और ''सूर्य'' ने उन्हें झुलसा दिया था; परमेश्वर के क्रोध ने उन्हें सुखा दिया, वे ऐसी शाखाएं है जो दाखलता अर्थात् मसीह में बनी नहीं रही और केवल जलाये जाने के योग्य थी। पृथ्वी की कटनी सुख गई और लगभग 2 अरब लोग या फिर उससे अधिक जो सांसार की कलीसियाओं में है, पूरी तरह से सुख गये।

वहाँ लगभग 5 अरब अन्य लोग संसार में हैं जिनका उद्धार नहीं हुआ है। हम जानते हैं कि परमेश्वर अब तक संसार की जनसंख्या से लाखों करोड़ों लोगों का उद्धार कर चुके हैं। भले ही 2 अरब लोग बचाए जा चुके है, तब भी 4,850,000,000 लोग बाकी है, जिनका उद्धार नहीं हुआ है – वे मसीही कहलाने वाले लोग नहीं हैं या फिर उनका कोई धर्म ही नहीं है, जहाँ तक परमेश्वर का प्रश्न है, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि 'एक ही मार्ग, एक ही सत्य और एक ही उद्धारकर्त्ता' है और यदि वे प्रभु के द्वारा उद्धार नहीं पाये हैं, तो वे संकरे मार्ग पर नहीं है, परन्तु वे 'चौडे मार्ग' पर है, जो विनाश को पहुँचाता है। उस चौड़े मार्ग में आप बायें चल सकते हैं या दायें, आप चाहे तो दूर चले जाये या फिर संकरे मार्ग के पास–पास चले, परन्तु तब भी आप चौड़े मार्ग पर ही है जो विनाश को पहुँचाता है। मुस्लिम मार्ग विनाश की ओर ले चलता है, हिन्दु मार्ग भी विनाश की ओर ले चलता है, और बौद्ध, नास्तीकवाद और अन्य सबके मार्ग जो संसार के हैं, वे विनाश की ओर ले चलते है। यह संसार उन लोगों से भरा है जो सोचते हैं – ''मैं इस मार्ग पर जा सकता हूँ, और यह सही और उचित मार्ग लगता है और मुझे स्वर्ग पहुँचाएगा, और मैं इसी मार्ग के अनुसार अपना जीवन जीऊंगा।'' परन्तु मसीह के अतिरिक्त अन्य सभी मार्ग अंत में 'आग की भट्ठी' या 'परमेश्वर के प्रकोप के रसकुण्ड' में लेकर जाते है, और वहाँ जाने

वाले सदा के लिये उनके सम्पूर्ण विनाश को प्राप्त होते है। दुष्टों का अंत उनकी गलती को प्रगट करेगा, वह उनकी मूर्खता को उजागर करेगा। वह प्रगट करेगा कि उन्होंने जो भी किया वह गलत था और धर्म के संबंध में जो भी कथन कहे, किसी अन्य सुसमाचार के पक्ष में, या उनकी गर्वभरी सोच में जिसने उनको परमेश्वर के वचन अर्थात् बाईबल से अधिक ऊँचे पर रखा, वे सब गलत थे। उन्होंने सोचा कि उन्हें बाईबल की आवश्यकता नहीं थी, और उन्होंने सोचा कि वे स्वयं उनके जीवनों पर अधिकार रखेंगे और उन्हें चलाएंगे, परन्तु अंत प्रमाणित करेगा और प्रत्येक उद्धार न पाये हुओं की भयंकर गलती को दिखायेगा। न्याय का दिन इन सब बातों को ला रहा है – वह दर्शाएगा कि परमेश्वर का मार्ग न केवल सच्चा मार्ग है पर सही मार्ग भी है – यह उचित, योग्य मार्ग था। हाँ, क्लेशकाल था, पर वह परमेश्वर के लोगों के लिये सामान्य बात है और अब अंत के दिनों में महाक्लेश आया था। बहुत दुख उठाकर परमेश्वर के लोग स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने वाले हैं, पर उस काल में (वह काल निकट और आता जा रहा है) परमेश्वर अन्ततः अपने वचन को पूरा करेंगे और दर्शाएंगे कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और उसका वचन सत्य एवं विश्वसनीय है, उस पर पूरे हृदय से भरोसा किया जा सकता है। जब परमेश्वर अंतिम रूप में वह कर चुकेंगे जो उन्होंने कहा था, वे इस संसार का नाश कर देंगे और एक नये आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि करेंगे। वे अपने लोगों को एक पुनरूत्थान प्राप्त देह प्रदान करेंगे जिसमें वे अनंतकाल तक परमेश्वर के साथ महिमामय दशा में रहेंगे। तब परमेश्वर के लोगों में प्रत्येक उसकी बड़ी प्रशंसा करेगा, उसे महिमा देगा, और उसका नाम सदा ऊँचा उठायेगा। बाईबल कहती है कि इस जीवन के कष्ट उस महिमामय भविष्य के सामने कुछ भी नहीं, जो प्रगट होगा और सही साबित होगा।

परमेश्वर 2 कुरिन्थियों 4:16–18 में कहते है :

इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

यह व्याख्या उस सनातन, अनंतकालीन परमेश्वर की ओर से है जो अनंतकाल में निवास करता है। वह अस्तित्व के सम्पूर्ण वर्णक्रम में निवास करता है, वह प्रारम्भ से ही अंत जानता है। इस कारण अंत और संसार के अंतिम विनाश के विषय में जानने के कारण वह उसके लोगों के अंतिम और महिमामय उत्कर्ष को भी जानता है कि वह उन्हें स्वर्गीय स्थानों में ऊँचे पर ले जाएगा (जैसा उसने प्रभु यीशु मसीह को ऊँचे पर उठाया) और यह जानकर कि वह कैसी भरपूर आत्मिक आशीषें अपने लोगों को सदा के लिये प्रदान करेगा, परमेश्वर यह कथन करते है : ''हमारा पलभर का हल्का सा क्लेश'' और यह एकपल

कितना लम्बा होता है? आप अपनी ऊँगलियाँ खोलकर 'एक' गिने और आपके गिनने से पहले ही वह पल समाप्त हो जायेगा, वह बहुत छोटा और त्वरित है, और ऐसा समय है जिसके विषय में हम सोच सकते है..... जी हाँ, आधुनिक शब्दावली में उसे nano seconds अर्थात सुक्ष्म पल कहते हैं, परन्तु यह बाईबल की बात है और परमेश्वर को उस भाषा या शब्दावली की आवश्कता नहीं है। वे केवल एक अति महत्वपूर्ण बात समझा रहे हैं कि हमारा यह सम्पूर्ण जीवन मात्र पलभर का है। यदि हम कठिनाईयों से गुजर रहे हैं या परीक्षायें, क्लेश, विपत्ति, शारीरिक भावनात्मक या आर्थिक रूप से तकलीफ में है, तो हमें यह जीवन लम्बा जान पड़ता है। संभव है कि हम इस अर्थ से पीड़ा में है कि हम विचलित है और जीवन में कठिन बातें है, पर ये सभी या कुछ कितनी भी बड़ी क्यों न लगे (अय्यूब का विचार करे) और हम जानते है कि कुछ लोग अविश्वसनीय रूप में दुख और क्लेश भोगते हैं, परन्तु फिर भी यदि आप किसी के जीवन की सबसे बड़ी तकलीफ या सबसे भयंकर दुख का विचार करे तो आप कह सकते हैं – "ओह! बेचारे ने कैसा दुखभरा जीवन जिया'', परन्तु यदि वे परमेश्वर की संतान है, तो क्या हमें उन पर तरस खाना चाहिये? नहीं, एक पल के लिये भी नहीं और यही कारण है कि प्रभु यीशु ने लाजर का दृष्टान्त दिया, वह भिखारी था, घावों से भरा और संसार बेचारे लाजर पर तरस खाता था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया नहीं दर्शाई और न हमें अपने आप पर दर्शाना चाहिये, क्योंकि परमेश्वर कहते हैं, चाहे जितना भी दुख क्लेश हम वर्तमान में सह रहे है और चाहे कितने लम्बे समय तक सहे (10 या, 50 या, 90 वर्ष) – वह ''बहुत ही महत्वपूर्ण और अनंत महिमा उत्पन्न करता जाता है। यदि आप सभी समुद्रतटों की समस्त बालू के किनकों की तुलना बालू के एक किनके से करें – वह महिमा है। वह अनंत है – अरबों–खरबों के उपर अरबों–खरबों बालू के किनके, सभी समुद्रतटों के मिला लीजिये, इस जीवन की तात्कालिक कठिनाईयाँ, जो पृथ्वी के जीवन में है, उनकी तुलना हम बालू के एक किनके से करे या सारे समुद्रों के पानी और एक बून्द से, यह बात बढ़ा चढ़ाकर नहीं कही जा रही है। यह बिल्कुल सटीक तुलना है, क्योंकि अनंतकाल चलता रहता है, चलता रहता है, उसमें अंत नहीं, वह सदा बढ़ता जाता है, और यहाँ हम पृथ्वी पर कुछ थोड़े से वर्ष बिताते हैं और फिर उनका अन्त आ जाता है। इसलिये परमेश्वर कहते है कि हम अपनी सोच, अपनी आँखें स्वर्ग की (उपर की) वस्तुओं पर लगाये – वे बातें जो अनदेखी है, क्योकि वे सत्य है। सिर्फ इसलिये कि आप उन्हें देख नहीं सकते, मत सोचिये कि वे वास्तविक नहीं है और उनका भरोसा नहीं कर सकते, क्योंकि वे वास्तव में सत्य है। आप को केवल अपना जीवन मसीह को सौंप देना है, और स्वयं को सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अनंतकालीन भुजाओं में निश्चिन्त होकर सौप देना है और भरोसा करना है, परमेश्वर पर जिसने इन बातों को कहा है, वह झूठ नहीं बोल सकता। उसने अपने वचन में इन बातों की घोषणा की है इस कारण उन पर विचार करे, उन पर भरोसा करे, न कि उन बातों पर जो आप इस संसार में आँखों से देखते है। इस संसर की बातें धोके से भरपूर है। संसार दर्शाता है मानों वही सब कुछ है, पर वास्तविकता में उसका बहुत ही कम महत्व है।

पुनः देखिए कि प्रकाशितवाक्य 14:18 में लिखा है :

फिर एक और स्वर्गदूत जिस आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगा कर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है।

यहाँ कुछ शब्द एक जैसे लगते हैं, पर उनके अर्थ भिन्न है। शब्द 'पकना' और 'पूरी तरह पकना' में पूरी तरह पकना, पद 15 में आये शब्द 'पक' से भिन्न है। पद 15 में 'पकने' का अनुवाद 'सूख गए' होना चाहिये। यह ग्रीक शब्द जिसे अंग्रेजी में (fully ripe) "पूरी तरह पकना" अनुवाद किया गया है वह स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 187 है, और यह अनुवाद केवल इसी पद में हुआ है। यही बात हम शब्द 'गुच्छे (clusters) के लिये भी पाते हैं, वह केवल इसी पद में है, इस कारण थोड़ा कठिन हो जाता है क्योंकि हम चाहते हैं कि परमेश्वर उन शब्दों को परिभाषित करे। जब वही शब्द अन्य स्थानों में उपयोग होता है, हम बाईबल में खोज सकते हैं और पदों को आपस में मिलाके एक परिभाषा या व्याख्या पा सकते है। परन्तु यहाँ हमें शब्द 'गुच्छे' समझने के लिये पुराने–नियम में खोजना होगा। गिनती 13:21–25 में यह लिखा है :

सो वे चल दिए, और सीन नाम जंगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग में है, सारे देश को देखभालकर उसका भेद लिया। सो वे दक्षिण देश हो कर चले, और हेब्रोन तक गए; वहां अहीमन, शेशै, और तल्मै नाम अनाकवंशी रहते थे। हेब्रोन तो मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहिले बसाया गया था। तब वे एशकोल नाम नाले तक गए, और वहां से एक डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ ली, और दो मनुष्य उस एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे अनारोंऔर अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले आए। इस्राएली वहां से जो दाखों का गुच्छा तोड़ ले आए थे, इस कारण उस स्थान का नाम एशकोल नाला रखा गया। चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद ले कर लौट आए।

यहाँ इब्रानी शब्द 'गुच्छे' का संबंध इब्रानी शब्द Eshcol (एश्कोल) से है – इस्राएली वहाँ से दाखों का गुच्छा तोड़ लाये थे इस कारण उस स्थान का नाम 'एश्कोल' नाला रखा गया। एश्कोल का अर्थ है – गुच्छा, और इसे इब्रानी में इसी तरह लिखा जाता है। हम एक तस्वीर देख सकते हैं कि वे प्रतिज्ञा के देश में गये और अनाकवंशियों को देखा और 12 में से 10 भेदिये एक बुरी खबर के साथ वापस आये (यहोशू और कालेब को छोड़कर)। वे भयभीत थे क्योंकि अनाक वंशी लोग दानवाकार थे और वे अपनी दृष्टि में टिड्डे के समान लग रहे थे। उनमें उनसे लड़ने और देश को जीतने का साहस नहीं था। इस कारण परमेश्वर ने इस्राएलियों को दण्ड दिया और वे उस जंगल में 40 वर्ष तक भटकते फिरे, एक दिन के बदले एक वर्ष का दण्ड। परन्तु वे अपने साथ वहाँ की उपज या फल

लेकर लौटे – उन्होंने अंगूरों का एक गुच्छा पाया, और ध्यान दीजिये कि – ''दो मनुष्य उसे लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले'', इस प्रकार, यह कोई छोटा–मोटा गुच्छा नहीं था। यह बहुत बड़ा रहा होगा क्योंकि दो मनुष्य उसे लाठी पर लटकाकर उठा रहे थे। और गुच्छे के विषय में यही विचार है।

प्रकाशितवाक्य 14 के पद 18 के अंत में हम फिर से पढ़ते हैं, ''अपना चोखा हँसुआ लगातार पृथ्वी की दाखलता के गुच्दे काट ले, क्योंकि उसकी दाख (पूरी तरह) पक चुकी है।'' यहाँ पृथ्वी की दाखलता से गुच्छे काटकर इकट्ठा करने की चर्चा है, सामान्य रूप में, दाख का संबंध मसीह से है, क्योंकि यीशु ने यूहन्ना 15:1 में कहा था :

''सच्ची दाखलता मैं हूँ और मेरा पिता किसान है।''

तब यूहन्ना 15:4–6 में यह लिखा है :

तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।

प्रभु (यीशु) स्वयं को 'दाखलता' के समान बताते है और फल (अंगूर) दाखलता में लगते हैं। डाली अपने आप से फल नहीं ला सकती यदि वह दाखलता में बनी न रहे। हो सकता है, वह भूमि पर गिरे और सूख जाये। निश्चय ही यहाँ यीशु मसीह का अभिप्राय परमेश्वर के वचन में बने रहने और लगातार बने रहने से है, जैसा कि यूहन्ना 8:31 में लिखा है : ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।''

यीशु कहते है कि वे सच्ची दाखलता है, पर उनका अभिप्राय यह नहीं कि केवल वे ही दाखलता है। व्यवस्थाविवरण 32:32 में यह लिखा है :

क्योंकि उनकी दाखलता सदोम की दाखलता से निकली, और अमोरा की दाख की बारियों में की है; उनकी दाख विषभरी और उनके गुच्छे कड़वे हैं;

यहाँ फिर से "गुच्छे" शब्द आया है, ध्यान दे कि उनकी दाखलता सदोम की दाखलता से निकली और अमोरा की दाख की बारियों में की है। व्यवस्थाविवरण 32 अध्याय में यहोवा मुख्य रूप से उन इस्राएलियों की बात कर रहे है, जो पराए देवताओं के पीछे गये और एक दूसरा सुसमाचार विकसित किया, और यह एक तस्वीर है कि जब नए नियम की

कलीसियाएँ दूसरे सुसमाचारों के पीछे जाएंगी, तब वे क्या करेगी – उनके पास एक दूसरी दाखलता होगी और वह दाखलता प्रभु यीशु मसीह नहीं है।

अब जब कि प्रकाशितवाक्य 14, उन लोगों का वर्णन करता है, जो परमेश्वर के क्रोध के आधीन है (यह निश्चित है क्योंकि वे परमेश्वर के प्रकोप के रसकुण्ड में डाले गये और पाँवों से रौंदे गये) वे सच्चे विश्वासीजन नहीं है, इसलिए वे 'सच्ची दाखलता' के नहीं कहे जा सकते पर वे 'दूसरी दाखलता' से है।

Revelation 14 Series, Study #48 by Chris McCann, originally aired October 16, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 48, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 16 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 48 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:18 पढेंगे :

फिर एक और स्वर्गदूत जिस आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिस के पास चोखा हंसुआ था, उस से ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगा कर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है।

हम जानते हैं कि 'स्वर्गदूत' या 'संदेशवाहक' मसीह है। चोखा हँसुआ लिये मसीह है और यह आज्ञा – "अपना चोखा हँसुआ लगाकर" का अर्थ है – "अपना चोखा हँसुआ भेज" या काटने वालों अर्थात् परमेश्वर के लोगों को भेज, और ''पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे काट ले क्योंकि उसकी दाखलता पक चुकी है।'' पिछली बार हमने कुछ दूसरी पदों में "गुच्छे" शब्द को देखा, और हमने शब्द 'दाखलता' को भी देखा, हमने सीखा कि बाईबल प्रभु यीशु मसीह के बारे में कहती है – ''सच्ची दाखलता मैं हूँ।'' पर हम व्यवस्थाविवरण 32:32 में भी गये थे :

क्योंकि उनकी दाखलता सदोम की दाखलता से निकली, और अमोरा की दाख की बारियों में की है; उनकी दाख विषभरी और उनके गुच्छे कड़वे हैं;

इसका संबंध सच्चे विश्वासियों से नहीं है, जो सच्ची दाखलता के है, पर वे दूसरी दाखलता में से है और व्यवस्थाविवरण में परमेश्वर इस्राएल के उन लोगों पर दण्ड सुनाते हुये कहते है कि उन्हे बेहतर समझना चाहिये था, इस प्रकार की भाषा का अधिकतर संबंध कलीसियाओं पर न्याय से है, जब वे कोई अन्य सुसमाचार विकसित करते, कोई और

मसीह और किसी अन्य दाखलता से संबंधित होते। यह सच्ची दाखलता नहीं है पर – सदोम की दाखलता से निकली और अमोरा की दाख की बारियों में की है, इस कारण, उनके गुच्छे कड़वे है, और उनके फल अच्छे नहीं परन्तु बुरे फल है।

हमें उत्सुकता होती है कि पृथ्वी के उद्धार न पाए हुओं के लिये परमेश्वर क्यों ऐसी भाषा का प्रयोग कर रहे है। यह अति स्पष्ट है कि प्रकाशितवाक्य 14 के इस वृतान्त में संसार के सभी उद्धार न पाये हुये व्यक्तियों पर परमेश्वर के न्याय का वर्णन दिया गया है। परन्तु फिर भी हम परमेश्वर द्वारा ऐसी भाषा, जैसे – ''पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे'' के आदी नहीं है, और तब अगली पद, प्रकाशितवाक्य 14:19 में, उन दाखलताओं के विषय में यह लिखा है :

और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृथ्वी की दाख लता का फल काट कर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया।

यह पढ़कर हम पक्की तौर पर जान लेते हैं कि हमारी संदर्भ पद में चुने हुओं दृष्टीक्षेप में नहीं है। वे उद्धार न पाए हुये लोग है और यह भाषा उन पर आनेवाले अंतिम न्याय के दण्ड को अभिव्यक्त करती है। अब योएल के अध्याय 3 में हम एक वृतान्त पढ़ते हैं, जो प्रकाशितवाक्य 14 से बहुत मिलता–जुलता है। योएल 3:12 में लिखा है :

जाति जाति के लोग उभर कर चढ़ जाएं और यहोशापात की तराई में जाएं, क्योंकि वहां मैं चारों ओर की सारी जातियों का न्याय करने को बैठूंगा॥

यहोशापात नाम का अर्थ है "**यहोवा** न्याय करता है"

''क्योंकि वहाँ मैं चारों ओर की सारी जातियों का न्याय करने के लिये बैठूंगा।''

यह वैसा ही है जैसा हमने पहले प्रकाशितवाक्य 14:14–15 में पढ़ा था, वहाँ मनुष्य का पुत्र बादलों पर बैठा है जब वह पृथ्वी की समस्त जातियों का न्याय करने के लिये आता है।

तब योएल 3:13 में लिखा है

हँसुआ लगाओ...

ठीक यही आज्ञा हमने कुछेक बार प्रकाशितवाक्य 14 में पढ़ी है – "अपना हँसुआ लगा", इसी प्रकार पुराने नियम का शब्द हँसुआ लगाओ का अनुवाद 'भेजने' के अर्थ में भी हुआ है। उदाहरण के लिये यही शब्द यशायाह 6:8 में भी आया है ''तब मैंने कहा मैं यहाँ हूँ, मुझे भेज।''

इसी प्रकार, योएल 3:13 में लिखा है :

हंसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ, दाख रौंदो, क्योंकि हौज़ भर गया है। रसकुण्ड उमण्डने लगे, क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है॥

हमारे इस वृतान्त में उमण्डने वाला 'रसकुण्ड', "दाख रौंदने" का कारण है। वहाँ क्या हुआ? उद्धार न पाये हुये लोग प्रभु यीशु मसीह के पाँवों तले रौंदे गये और रसकुण्ड से लोहू बाहर निकलकर बहने लगा। लोहू क्यों निकला? वह उमण्ड रहा था और वास्तव में स्थिति ऐसी ही है और हम इस तथ्य पर विचार करे कि इस संसार में 7 अरब लोग है जिनका न्याय हो रहा है और वे परमेश्वर के क्रोध के आधीन है। कई लाख लोग है जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया है, परन्तु संसार की आबादी का बहुत बड़ा भाग उद्धार न पाये लोगों का है और वे परमेश्वर के क्रोध के रसकुण्ड में रौंदे जा रहे हैं। इस कारण हम निश्चित रूप में देख सकते हैं कि रसकुण्ड क्यों भरे हैं और 'रस' क्यों उमण्ड रहा है और रसकुण्ड से लोहू क्यों बह रहा है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 14 में कहा गया है, ''सौ कोस तक बह गया।''

तब योएल 3:13 में लिखा है :

''क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है.....''

एक बार फिर, यह उद्धार न पाये लोगों का वर्णन है, जिसमें लोग परमेश्वर के क्रोध के रसकुण्ड में रौंदे जा रहे है। परमेश्वर की व्यवस्था को संतुष्ट किया जाना अवश्य है और यह पलटा लेने का दिन है, जब व्यवस्था बदला ले रही है और मानवजाति के अपराधों के लिये जो दण्ड बाकी था, उसे अमल में ला रही है। योएल 3:13 हमारी सहायता करता है कि भले ही हम इस भाषा से भली भांति परिचित नहीं है, हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि परमेश्वर समस्त पृथ्वी को ऐसी दाखलता के रूप में देख रहे हैं जिसने बुरे फल उत्पन्न किये थे, वे फल रसकुण्ड में डाले गये क्योंकि वे अच्छे फल नहीं थे। जैसे चर्च की फसल मुरझा गई, अब कलीसियाओं के बाहर यह एक दूसरी दाखलता थी और उसके 'दाख के गुच्छे' परमेश्वर के क्रोध के अधीन थे।

परमेश्वर पृथ्वी की दाखलता के गुच्छों की बात करते है, उसका एक कारण यह भी संभावित है कि परमेश्वर के सुसमाचार प्रचार का अंतिम कालखण्ड या पराकाष्ट कलीसियाओं और मण्डलियों के बाहर किया गया। स्मरण करें कि महाक्लेश के बिलकुल आरम्भ में, 21 मई 1988 को पवित्र आत्मा ने कलीसियाओं और मण्डलियों को त्याग दिया, और महाक्लेश के पूरे कालखण्ड में उनकी फसलें खराब हुई, और अंत में 21 मई 2011 को जंगली बीज के रूप में उन्हें आग में डाले जाने के लिए उनकी गट्ठीया बाँधी गई। किन्तु महाक्लेश के दूसरे भाग में परमेश्वर पिछली या अंतिम वर्षा को भेज रहा था, जो संसार में कलीसियाओं और मण्डलियों के बाहर हुई। संसार पर वर्षा जारी थी और उसने फसल (फल) भी उत्पन्न किया, क्योंकि परमेश्वर ने महाक्लेश के उन अंतिम 17 वर्षों के

दौरान एक बड़ी भीड़ का उद्धार किया। इसलिये उस समय कटनी की भाषा का उपयोग हुआ है, वह 'अच्छे फलों' को लायी, वे जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया। परन्तु व्यवहारिक रूप में समस्त संसार ने संदेश को सुना, और इस कारण उन पर भी वर्षा हुई और उन्हें भी परमेश्वर के वचन का बीज मिला, वह उनके हृदयों में पड़ा। वास्तव में बीज बोने का एक बहुत बड़ा और व्यापक कार्यक्रम था, जो इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था, जिसने संसार में इतने अधिक आत्मिक बीज बोया गया। संसार ने कभी पहले ऐसा अनुभव नहीं पाया था, इस प्रकार, परमेश्वर का वचन अतुलनीय रूप में संसार के विभिन्न देशों में गया। न्याय का दिन उनकी आँखों के समाने लाया गया और उस 'नियुक्त किये गये दिन' के संदर्भ में बाईबल के संदेश उन तक पहुँचाये गये। यह इस बात का संकेत भी है कि एक 'न्याय करने वाला' था और हम सब पापी थे, न्याय के योग्य और दोषी पाए गए। अनुप्रयोग यह है कि परमेश्वर संसार को चेतावनी दे रहे थे, फिर भी वे एक अनुग्रहकारी और दयावन्त परमेश्वर थे, जिसे, इसके पहले कि वह दिन भूसे के समान बीत जाए, दण्ड की आज्ञा से पहले खोजा जा सकता था और याचना की जा सकती थी। ये सभी बातें 21 मई 2011, अर्थात न्याय के दिन के संदेशों में थी। इस प्रकार, 'वर्षा' आयी 'बीज' बोये गये, और परमेश्वर ने मनुष्यों को उद्धार भी दिया, पर शेष लोगों का क्या हुआ? बाकी लोग जिन्होंने सुना उनका क्या हुआ (उनमें से कितनों ने पहली बार सुना था) जिन्होंने सुसमाचार के संदेश और परमेश्वर के वचन से मिलने वाली जानकारियों को सुना था? उन्हें चेतावनी दी गयी थी, पर उन्होंने चेतावनी ग्रहण नहीं की, उन्होंने पश्चाताप नहीं किया, वे परमेश्वर की ओर नहीं फिरे और दया के लिये याचना नहीं की, उन्होंने प्रभु की खोज नहीं की जबकि प्रभु मिल सकते थे। इसके बदले वे अपनी इच्छा के जीवन में चले गये, और यह अभिव्यक्त करता है कि संसार के बहुसंख्यक लोगों के साथ क्या हुआ। ठीक, हो सकता है कि परमेश्वर उन्हें एक फसल के रूप में देख रहे है, जो कि मुरझा गई और वह फसल (फल) अच्छी नहीं थी। बीज बोये गये, वर्षा आई पर उसने कोई बहुमूल्य फसल या फल को उत्पन्न नहीं किया। इस कारण, "आओ, हम पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे काट ले", और उन्हें परमेश्वर के क्रोध के रसकुण्ड में डाल दे। मेरा सोचना है कि यहाँ सामान्य विचार यही है।

व्यवस्थाविवरण 32:32 में कहा गया है कि उनकी दाखलता सदोम की है परन्तु एक और संदर्भ पद है जिसमें परमेश्वर दाखलता के बारे में कहते हैं, मैं सोचता हूँ व्यवस्थाविवरण 32 अधिकांश रूप में कलीसियाओंपर परमेश्वर के न्याय का वर्णन करती है, परन्तु यशायाह अध्याय 24 में एक स्थान और है, वहाँ भी हम दाखलता का वर्णन पाते हैं, यशायाह 24, बाईबल में एक विशेष अध्याय है जिसमें परमेश्वर ने पूरा ध्यान 'संसार के न्याय' पर केन्द्रित किया है, जिस प्रकार हम यिर्मयाह की पुस्तक में यहूदा और यरूशलेम पर परमेश्वर के न्याय का वर्णन पढ़ सकते है, और यह भाषा सबसे पहले परमेश्वर के घर से न्याय के आरम्भ होने पर केन्द्रित है, और वास्तव में देखे तो हम संसार के न्याय का बहुत अधिक वर्णन नहीं पढ़ते है। परन्तु यशायाह 24 इसके विपरीत है – इसमें संसार के न्याय

पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है, न कि धर्म से पतित कलीसियाओं पर। यहाँ शब्द 'पृथ्वी' बहुत बार उपयोग में आया है और शब्द 'संसार' भी, जैसा हम यशायाह 24:6 में पढ़ते हैं :

इस कारण पृथ्वी को शाप ग्रसेगा और उस में रहने वाले दोषी ठहरेंगे; और इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे।

यहाँ परमेश्वर के आत्मिक न्याय के संसार पर और उसके सब निवासियों पर आने का वर्णन है। स्मरण रखें कि प्रकाशितवाक्य 8 की अंतिम पद में लिखा है – ''पृथ्वी के रहने वालों पर हाय, हाय, हाय।'' यह एक प्रमुख पद है, जो कलीसियाओ पर न्याय और संसार पर न्याय के बीच के समय का संकेत करती है। यहाँ भी पृथ्वी के रहने वाले जलाये गये है, और बहुत थोड़े बच गये है और 'थोड़े लोग बचे है' क्योंकि चुने हुये लोग न्याय के दिन में अब भी पृथ्वी पर निवास कर रहे है, पर सभी उद्धार न पाए हुये जला दिये गये हैं, एक बार जब परमेश्वर स्वर्ग का द्वार बन्द करते हैं, उन का न्याय हुआ। परन्तु उसी समय चुने हुये ''जलाए नहीं गए'', और हम स्वर्ग का द्वार बन्द होने के बाद भी नाश नहीं किये गये, क्योंकि परमेश्वर लोगों को पहले ही उद्धार प्रदान कर चुके है। तब यशायाह 24:7 में आगे कहा गया है :

नया दाखमधु जाता रहेगा, दाखलता मुर्झा जाएगी, और जितने मन में आनन्द करते हैं सब लम्बी लम्बी सांस लेंगे।

अब यहाँ पृथ्वी पर परमेश्वर के न्याय का संदर्भ है। ''दाखलता मुर्झा जायेगी'', यहाँ दाखलता मुर्झा जायेगी से क्या अभिप्राय है? यह शब्द यिर्मयाह के अध्याय 14 में हमारे लिये परिभाषित किया गया है। पुनः, इस अध्याय में हम कलीसियाओं पर परमेश्वर के न्याय का वर्णन पढ़ते हैं, पर इससे हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि 'मुरझाने' का क्या अर्थ है। यिर्मयाह 14:1–3 में यह लिखा है :

यहोवा का वचन जो यिर्मयाह के पास सूखे वर्ष के विषय में पहुंचा: यहूदा विलाप करता और फाटकों में लोग शोक का पहिरावा पहिने हुए भूमि पर उदास बैठे हैं; और यरूशलेम की चिल्लाहट आकाश तक पहुंच गई है। और उनके बड़े लोग उनके छोटे लोगों को पानी के लिये भेजते हैं; वे गड़हों पर आकर पानी नहीं पाते इसलिये छूछे बर्तन लिए हुए घर लौट जाते हैं; वे लज्जित और निराश हो कर सिर ढांप लेते हैं।

आगे अकाल के विषय में अधिक बद्तर भाषा का उपयोग हुआ है। वहाँ पानी नहीं है और यह दर्शाता है कि परमेश्वर के न्याय के समय कलीसियाओं में सुसमाचार नहीं था। 'यूहदा के फाटकों मे विलाप' यह तथ्य दर्शाता है कि उस समय वहाँ उद्धार नहीं था।

जब हम पढ़ते है – "नया दाखमधु जाता रहेगा, दाखलता मुर्झा जाएगी और जितने मन में आनन्द करते है, सब लम्बी–लम्बी साँस लेंगे", तब मुझे लगता है कि यह संदर्भ सच्चे विश्वासियों का है। परमेश्वर की कोई संतान खुश या आनन्दित नहीं होगी कि परमेश्वर ने अपने उद्धार का कार्य समाप्त कर दिया है। स्मरण रखें, परमेश्वर ने कहा, जब एक पापी पश्चाताप करता है तब स्वर्ग में आनन्द होता है, पर अब स्वर्ग में कोई आनन्द नहीं क्योंकि परमेश्वर के लोगों के बीच कोई आनन्द नहीं है। परमेश्वर को दुष्ट के मरने से कोई आनन्द नहीं होता, और अभी हमारी दृष्टी के सामने यही हो रहा है। परमेश्वर दुष्ट को मार रहे हैं। वे उन्हें मृत्यु दे रहे हैं और यदि परमेश्वर को दुष्ट के मरने से कोई आनन्द नहीं होता तो आप निश्चय मान सकते हैं कि परमेश्वर के लोगों को भी दुष्टों के मरने से आनन्द नहीं होता। जैसा कि लूका 16 में, लाजर के मरने के दृष्टान्त में है कि वह अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया और धनी मनुष्य ने नरक से विनती की कि कोई पानी की एक बून्द उसकी जीभ पर रखें, उस समय जो चर्चा हुई उसमें यह प्रत्युत्तर भी था कि यदि कोई स्वर्ग से जाना भी चाहे तो वह जा नहीं सकता। यहाँ 'जाना चाहे' दर्शाता है कि उनमें (सहायता करने की) अभिलाषा थी, और निश्चय ही यह हमारी भी इच्छा है क्योंकि हमने भरपूर आनन्द पाया (और कल्पना के बाहर आशीषें पाई) और इस योग्य बनाये गये कि सुसमाचार का 'जल' लेकर प्यासी आत्माओं तक जा सके। हम वह संदेश लेकर संसार में गये और परमेश्वर ने उसके लोगों के प्रयासों के द्वारा उनके चुने हुओं को बचा लिया, परमेश्वर ने उन्हें उनकी सुइच्छा के अनुसार उनमें उसकी इच्छा पूरी करने का संकल्प और शक्ति दी। यह परमेश्वर की सुइच्छा थी कि वह अपने पहले से चुने हुये लोगों का उद्धार करे, और परमेश्वर के लोग भी उसके इस कार्य में आनंदित थे। परंतु अब उद्धार न होने की वजह से हमें आनन्द नही होता और इसलिए सब लम्बी–लम्बी साँस लेंगे। अब जो सुसमाचार सुनाया जाता है "कडवा" जल है, परंतु फिर भी हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिये जिसने हमें उसकी भेड़ों को चराने, फिर से भविष्यद्वाणी करने और संसार की जातियों में बेबीलोन के पतन की उद्घोषणा करने की आज्ञा दी थी।

'मुर्झाने' का अभिप्राय और अधिक स्पष्ट रूप में समझने के लिये आइये हम योएल की पुस्तक में वापस जाए परन्तु इस बार अध्याय 1 में पढ़ेंगे, योएल 1:10–12 में यह लिखा हैः

खेती मारी गई, भूमि विलाप करती है; क्योंकि अन्न नाश हो गया, नया दाखमधु सूख गया, तेल भी सूख गया है॥ हे किसानो, लज्जित हो, हे दाख की बारी के मालियों, गेहूं और जव के लिये हाय, हाय करो; क्योंकि खेती मारी गई है। दाखलता सूख गई, और अंजीर का वृक्ष कुम्हला गया है। अनार, ताड़, सेव, वरन मैदान के सब वृक्ष सूख गए हैं; और मनुष्यों का हर्ष जाता रहा है॥

यह जरा भी सुखदायी बात नहीं है। योएल का अध्याय 1 महाक्लेश के समय में कलीसियाओ पर परमेश्वर के न्याय का वर्णन कर रहा है, पर यह क्रोध का वही कटोरा है

जो अब संसार पर उण्डेला गया है – और ''नया दाखमधु सूख रहा है।'' कटनी पूरी हो चुकी है। अब कोई फसल बाकी न रही; और अब उद्धार पाने के लिए कोई लोग नही है, इसलिए परमेश्वर इस तस्वीर के द्वारा वर्णन कर रहे हैं कि वे 'पृथ्वी की दाखलता' के साथ क्या करने जा रहे हैं, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 14:19 में लिखा है :

और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृथ्वी की दाख लता का फल काट कर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया।

यहाँ फिर एक बार, 'पृथ्वी की दाख' रसकुण्ड में डाली गयी और हम प्रकाशितवाक्य 19 में 'न्याय के दिन' के बारे में पढ़ते हैं, वह प्रभु यीशु के विषय में है। प्रकाशितवाक्य 19:15 में हम पढ़ते है :

और जाति जाति को मारने के लिये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।

आप देख सकते है, यहाँ प्रमाण है कि मसीह जातियों को दण्ड दे रहे है, अर्थात् संसार के उद्धार न पाए हुए लोगों को, जो बाँधकर परमेश्वर के क्रोध के रसकुण्ड में डाले गये है। मेरे विचार से ऐसा होना निश्चित है। इसमें संदेह नहीं है कि 'पृथ्वी की दाखलता' और 'दाख के गुच्छे' जो पूरी तरह पक चुके है, वे संसार के उद्धार न पाये हुओं की तस्वीर है। वे परमेश्वर के स्वरूप की समानता में सृजे गये थे और परमेश्वर ने पिछली वर्षा भेजी जो उन पर आई, फिर भी उनमें बहुमूल्य फसल उत्पन्न नहीं हुई। जब समय पूरा हुआ और 21 मई 2011 को वर्षा बन्द हो गई, तब उस फसल को नष्ट करने का समय आया कि 'दाख के गुच्छे' तोड़े जाये और पाँवों तले रौंदे जाये ताकि उन्हें उनके पापों का दण्ड मिले।

Revelation 14 Series, Study #49 by Chris McCann, originally aired October 17, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 49, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 17 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 49 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:19–20 पढेंगे :

और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृथ्वी की दाख लता का फल काट कर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया। और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

जब हम पद 20 तक पढ़ते हैं, प्रकाशितवाक्य का अध्याय 14 समाप्त होता है। न्याय के समय संसार के अंत में होने वाली 'कटनी' पर परमेश्वर के विस्तृत विचार विमर्श का यहाँ समापन है। निष्कर्ष में कहा गया है कि पृथ्वी की दाखलता के 'दाख के गुच्छे' पूरी तरह पक चुके है, और उन्हें तोड़कर परमेश्वर के क्रोध के रसकुण्ड में डाला गया है।

यहाँ 'रस कुण्ड' का तीन बार उल्लेख है, एक बार पद 19 में और दो बार पद 20 में। रसकुण्ड के लिये प्रयुक्त ग्रीक शब्द स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 3025 है, यह ग्रीक शब्द Lenos (लेनोस) है। नये नियम में इसका अनुवाद केवल 'रसकुण्ड' किया गया है। यह नये नियम में पाँच बार आया है और तीन बार प्रकाशितवाक्य 14 की इन दो पदों में है। एक बार यह प्रकाशितवाक्य 19:15 में भी आया है :

और जाति जाति को मारने के लिये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।

यहाँ भी वही भाषा है जिसे हम प्रकाशितवाक्य 14 में पढ़ते आये है, यह परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रसकुण्ड के संदर्भ में है।

पाँचवी बार Lenos शब्द, मत्ती के सुसमाचार अध्याय 21 में प्रयुक्त हुआ है। इस दृष्टान्त में जो प्रभू हमें मत्ती 21:33–34 में दे रहे है, हम वहा पढते है :

एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्थ था, जिस ने दाख की बारी लगाई; और उसके चारों ओर बाड़ा बान्धा; और उस में रस का कुंड खोदा; और गुम्मट बनाया; और किसानों को उसका ठेका देकर पर देश चला गया। जब फल का समय निकट आया, तो उस ने अपने दासों को उसका फल लेने के लिये किसानों के पास भेजा।

यह एक दृष्टान्त है जिसमें किसानों के पास सेवकों को भेजा गया, पर किसानों ने उन्हें मारा–पीटा, किसी को पत्थराव किया और किसी को मार डाला। सबसे अंत में उस गृहस्थ ने अपने पुत्र को यह सोचकर भेजा कि वे उसका आदर करेंगे, पर उन्होंने उसे पकड़ा और मार डाला। मत्ती 21:39–41 में लिखा है :

और उन्होंने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला। इसलिये जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा? उन्होंने उस से कहा, वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा; और दाख की बारी का ठेका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे। यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही को ने के सिरे का पत्थर हो गया?

यह दृष्टान्त इसलिये दिया गया कि परमेश्वर की दाख की बारी लगाने और फल उत्पन्न करने की योजना की शिक्षा दे, यहाँ कहा गया है – जब फल का समय निकट आया – अर्थात् एक समय आया जब दाख की बारी में फल लगे। दाख की बारी का उद्देश्य आत्मिक रूप में प्रभु यीशु मसीह को संसार में लाना था। दाख की बारी इस्राएल देश को दर्शाती है, और इस्राएल ने पुराने नियम की "आदि धर्मिक वर्षा" को पाया और मसीह इस संसार में (फल के रूप में) आये। फल का अभिप्राय मसीह की मृत्यु था, यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीह के लिये पहले से ही नियुक्त किया गया था, कि मसीह क्रूस पर चढ़े और उन कामों को दर्शाये जो उसने संसार की नींव रखे जाने से पूर्व सम्पन्न किये थे। जब मसीह ने यह सब सम्पन्न किया, वह 'पहिली उपज का पहिला फल' की पूर्णता थी। इस प्रकार, दाख की बारी में रसकुण्ड एक प्रकार से परमेश्वर के न्याय से संबंधित है, या कम से कम उसका संबंध 'यीशु मसीह' पर परमेश्वर के न्याय (दण्ड) को लाने के उद्देश्य से है कि परमेश्वर का पुत्र हम मनुष्यों के बदले में दण्ड पाये।

1 राजा, अध्याय 21 में एक ऐतिहासिक वृत्तान्त है, हम इस अध्ययन में उस पर विचार नहीं करेंगे, परन्तु वह वास्तव में इस दृष्टांत की बातों को दर्शाता है, क्योंकि वहाँ नाबोत नाम एक यिज्रेली था और राजा आहाब के राज मन्दिर के पास उसकी 'दाख की बारी' थी। राजा अहाब नाबोत की बारी चाहता था, पर नाबोत ने उसे नहीं दी, न उसे बेची, इस कारण अहाब की पत्नी इजेबेल ने झूठे गवाहों के द्वारा एक पर्व में नाबोत के विरूद्ध झूठी साक्षी दिलवाई कि नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की है। तब वे उसे बाहर ले गये और नाबोत को पत्थराव करके मरवा दिया, और राजा अहाब ने नाबोत की बारी हड़प ली। कितना रोचक तथ्य है कि नाबोत नाम का अर्थ है "फल"। यह शब्द स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 5022 है और इसकी उत्पत्ति स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 5011 और # 5108 से है। इस प्रकार नाबोत जो दाख की बारी का स्वामी था, उसकी दाख की बारी उसी प्रकार से हड़प ली गयी जैसा हमने पढ़ा कि किसानों ने गृहस्थ के सेवकों को मार डाला और जब पुत्र भेजा गया, उन्होंने मत्ती 21:38 में कहा : ''यह तो वारिस है, आओ, इसे मार डाले और इसकी मीरास ले ले।'' जिस प्रकार, नाबोत के नाम का अर्थ 'फल' था और आत्मिक रूप में वह दाख की बारी का फल था, वैसे ही यीशु मसीह वह फल था जिसे पुराने नियम में 'आदि धार्मिकता की वर्षा' ने उत्पन्न किया, जब इस्राएलियों ने प्रभु

को रोमी अधिकारियों के हाथ क्रूस पर चढ़ाने के लिये सौंप दिया, तब वह इस्राएल रूपी 'दाख की बारी' का "फल" था और यही उस दाख की बारी को लगाने का उद्देश्य था, परमेश्वर ने उसे इसीलिये लगाया था कि 'मसीहा' अर्थात् अनंत परमेश्वर को देह में लाए, वह मानव रूप में जन्मा और हमारे बीच में उसने डेरा किया। दृष्टांत का विचार यही है, दाख की बारी में रसकुण्ड था, किसानों ने पुत्र को पकड़ा, जो इस्राएलियों द्वारा प्रभु यीशु को पकड़े जाने का संकेत था।

यह साबित करने के लिये कि मसीह ही फल था जिसका संबंध रसकुण्ड से था, एक दूसरा तरीका भी है। मत्ती 26:36–39 में लिखा है :

तब यीशु ने अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं। और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। तब उस ने उन से कहा; मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।

हम जानते है कि प्रभु ने यह याचना दो बार और की थी – कुल मिलाकर तीन बार। शब्द 'गतसमनी' नये–नियम में केवल दो बार आया है, एक यहाँ और दूसरी बार मरकुस 14 में, जिसमें यही सुसमाचार वृतान्त दिया गया है, वहाँ मरकुस 14:32–36 में लिखा है :

फिर वे गतसमने नाम एक जगह में आए, और उस ने अपने चेलों से कहा, यहां बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूं। और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया: और बहुत ही अधीर, और व्याकुल होने लगा। और उन से कहा; मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मैं मरने पर हूं: तुम यहां ठहरो, और जागते रहो। और वह थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा, कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए। और कहा, हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।

यह वही समान्तर वृतान्त है, जो मैं पढ़ना चाहता था कि बता सकूं – गतसमनी शब्द का दो बार उपयोग हुआ है। मरकुस 14:32 पर ध्यान दे – ''फिर वे गतसमनी नाम एक जगह में आये'' और तुरन्त ही यीशु आत्मा में बहुत अधीर और व्याकुल हो गये – ''मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ।'' हम देख सकते है कि वह गतसमनी में ही परमेश्वर के क्रोध के कारण दुख उठा रहा था, और वह गुरूवार की शाम थी, और यह

बात सटीक बैठती है क्योंकि बाईबल मनुष्य के पूत्र के विषय में कहती है, वह तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के भीतर रहा। इसका आरंम्भ गुरूवार की रात से हुआ, और फिर शुक्रवार, और शुक्रवार की रात, फिर शनिवार और शनिवार की रात, वह मानो कब्र के भीतर रहा और तब रविवार – तीसरे दिन वह मृतकों में से जी उठा, इस प्रकार यह तीन दिन और तीन रातें है। गतसमनी में ही परमेश्वर के क्रोध का अनुभव और क्रोध के कटोरे को पीने का अनुभव उसे मिला, जिस पल उसने गतसमनी के बगीचे में प्रवेश किया उसी समय परमेश्वर ने उसके क्रोध का प्याला उसे पीने के लिये देना आरम्भ किया, परन्तु यह पाप का दाम चुकाने के लिये नहीं था, क्योंकि वह यह कार्य पृथ्वी की नींव रखे जाने के पूर्व सम्पन्न कर चुका था। वह इस संसार में उन बातों को दर्शाने आया था जो वह कर चुका था, और इसके लिये आवश्यक था कि वह वास्तव में परमेश्वर के क्रोध को दुसरी बार सहे, जब वह यह सब प्रदर्शित कर रहा था। यह भयंकर प्रकोप था जिसने स्वयं अनंत परमेश्वर को ऐसे अनुभव में ला दिया कि 'उसका मन इतना उदास था कि उसका प्राण निकलने पर था' और हम देख सकते है कि इन भयंकर बातों को अनुभव करते हुये प्रभु कैसी आत्मिक रूप में बड़ी वेदना में थे, क्योंकि वहाँ भौतिक रूप में कोई कटोरा नहीं था। यदि कोई उस समय प्रभु को गतसमनी में दूर से देखता तो उन्हें अकेला देखता, वहाँ स्वर्ग से कोई बिजली नहीं गिरी और न कोई तलवार उस पर आई, परन्तु वहाँ केवल प्रभु दिखाई देते – घुटने टेके हुये और प्रार्थना करते हुये। यह दिखाई न देने वाला न्याय (दण्ड) था, इस कारण 'आत्मिक' था, पर यह न्याय अति वास्तविक रूप में प्रभु यीशु मसीह पर आ रहा था।

शब्द 'गतसमनी' पुराने–नियम से है। यह दो इब्रानी शब्दों का मेल है – गत (Gath) और समनी (shemen)। शब्द shemen स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 8081 है, और उसका अर्थ तेल (Oil) या जैतून (olive) या फलदायी (fruitful) से है। गत स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 1660 है और उसका अर्थ 'दबाना', 'दांवना' या 'रसकुण्ड' है। इस प्रकार, गतसमनी को एक साथ जोड़ने पर oil press "तेल की घानी" या "फलदायी रसकुण्ड" (fruitful winepress) का अर्थ निकलता है। शब्दों का मेल या मिश्रण (योग) है, जिसे हम साथ–साथ रखकर अर्थ निकाल सकते हैं क्योंकि परमेश्वर इन विभिन्न शब्दों के मेल से शब्द संरचना करते हैं। परन्तु विचार यह है कि प्रभु यीशु 'फल' है जिसे इस्राएल ने या आदि धार्मिकता की वर्षा ने उत्पन्न किया था। वर्षा का एक समय है, फिर अकाल का एक समय है, और तब 'रसकुण्ड' या 'तेल की घानी' का समय है – जिसमें मसीह को परमेश्वर के क्रोध के कारण पाँवों तले रौंदा जायेगा। यहाँ 'तेल की घानी' का विचार सही बैठता है क्योंकि पवित्र आत्मा का प्रतीक 'तेल' है, और जब मसीह को परमेश्वर के क्रोध के कारण पाँवों तले रौंदा गया, तब 'तेल' बह निकला और अधिक समय नहीं बीता, 50 दिनों के बाद 'पेंटिकुस्त' का दिन आया, और पवित्र आत्मा (तेल) संसार पर उण्डेला गया। तब दूसरी बार पवित्र आत्मा को उस बड़ी कटनी के दूसरे भाग में 1994 के सुवर्ण वर्ष में उण्डेला

गया, यह भी मसीह के उस कार्य का परिणाम था जो उसने परमेश्वर के क्रोध को सहकर पूरा किया था।

इब्रानी शब्द 'गत' (gath) स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 1660 है, और यह 5 बार आया है, जिस प्रकार ग्रीक शब्द lenos पाँच बार आया है। यह इब्रानी शब्द 5 बार पुराने–नियम में आया है, और एक बार यशायाह 63:1–4 में आया है :

यह कौन है जो एदोम देश के बोस्त्रा नगर से बैंजनी वस्त्र पहिने हुए चला आता है, जो अति बलवान और भड़कीला पहिरावा पहिने हुए झूमता चला आता है? यह मैं ही हूं, जो धर्म से बोलता और पूरा उद्धार करने की शक्ति रखता हूं। तेरा पहिरावा क्यों लाल है? और क्या कारण है कि तेरे वस्त्र हौद में दाख रौंदने वाले के समान हैं? मैं ने तो अकेले ही हौद में दाखें रौंदी हैं, और देश के लोगों में से किसी ने मेरा साथ नहीं दिया; हां, मैं ने अपने क्रोध में आकर उन्हें रौंदा और जलकर उन्हें लताड़ा; उनके लोहू के छींटे मेरे वस्त्रों पर पड़े हैं, इस से मेरा सारा पहिरावा धब्बेदार हो गया है। क्योंकि पलटा लेने का दिन मेरे मन में था, और मेरी छुड़ाई हुई प्रजा का वर्ष आ पहुंचा है।

मुझे लगता है, यहाँ तस्वीर के दो अर्थ है। सर्वप्रथम वह मसीह है जो अकेले रसकुण्ड में दाँवनी करते हैं और वे मेल्कीसेदेक है। वे ही है जिन्होंने स्वयं को मेल्कीसेदेक की रीति पर महायाजक के रूप में बलिदान किया। स्मरण करें कि कैसे वे अब्राहम के दिनों में प्रगट हुये थे। मेल्कीसेदेक (जो मसीह है) का अस्तित्व पृथ्वी की नेंव रखे जाने से पहले से था जबकि प्रभु ने परमेश्वर के लोगों का पाप अपने उपर लेकर उन पापों के लिये मृत्यु भोगने स्वयं को परमेश्वर की इच्छा के आधीन कर दिया था। उन्होंने महायाजक मेल्कीसेदेक के कार्य को सम्पन्न किया।

मसीह ने रसकुण्ड की अकेले दाँवनी की, फिर भी वह स्वयं उसमें रौंदा गया। फिर भी लिखा है – ''मैंने अपने क्रोध में आकर उन्हें रौंदा'', मुझे लगता है कि इस कथन का संदर्भ अंतिम न्याय और 'बदला लेने के दिन' से संबंधित है, जिस विष में पद 4 में लिखा है। परमेश्वर 'न्याय के दिन' को वहाँ 'बदला लेने का दिन' कहते हैं। इस प्रकार 'रसकुण्ड' का पूरा–पूरा संबंध परमेश्वर के क्रोध से है। मसीह जो आत्मिक रीति से दाँवनी में कुचला गया और गतसमनी में पैरों तले रौंदा गया, उसने आत्मिक रूप में उस क्रोध को अनुभव किया। यशायाह 63 में इस विषय पर चर्चा की गई है।

हम विलापगीत 1:15 में पढ़ते है :

यहोवा ने मेरे सब पराक्रमी पुरुषों को तुच्छ जाना; उसने नियत पर्व का प्रचार कर के लोगों को मेरे विरुद्ध बुलाया कि मेरे जवानों को पीस डालें; यहूदा की कुमारी कन्या को यहोवा ने मानो कोल्हू में पेरा है।

यह 'गत' इब्रानी का शब्द स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 1660 है। यहाँ परमेश्वर ऐतिहासिक रूप में यहूदा पर आये दण्ड का वर्णन कर रहे हैं और जो लोग उनके विरूद्ध आये, वे राजा नबूकदनेस्सर के नेतृत्व में आये बेबीलोन के लोग थे। जो न्याय यहूदा की अविश्वासयोग्यता के कारण आया वह उस न्याय की तस्वीर है जो जगत के अंत में महाक्लेश के शुरूवात में कलीसियाई युग का अंत होने पर परमेश्वर के घर से आरम्भ हुआ। उसका आरंभ 1988 को हुआ।

यहाँ रसकुण्ड दृष्टीक्षेप में है, और परमेश्वर जवानों को रौंद रहे हैं और कुमारी कन्याये अर्थात यहूदा की कुमारी कन्याये (मानों) कोल्हू में पेरी जा रही है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर कलीसियाओं पर न्याय की बराबरी उस समय से कर रहे है जब वे उसे रसकुण्ड में डाल रहे हैं और वे पाँवों तले रौंदे जा रहे है। यहाँ भी परमेश्वर के क्रोध को रसकुण्ड के रूप में दर्शाया गया है।

जब मसीह को गतसमनी में कुचला गया और रसकुण्ड में रौंदा गया, जो कि एक आत्मिक न्याय (दण्ड) था, हम कुछ और भी देखते है, यह कि यह आत्मिक न्याय कलीसियाओं पर था और उनकी पहचान भी विलापगीत 1:15 में रसकुण्ड के साथ की जाती है। यह तस्वीर संसार पर अंतिम न्याय के विषय में समझने में हमारी सहायता करती है जिसके बारे में हम प्रकाशितवाक्य 14 में पढ़ रहे हैं, जिसमें प्रभु ने 'पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे' काट लेने और उन्हें 'रसकुण्ड' में डालकर, पैरों तले रौंदने की तस्वीर दिखाई है। यह भी हमें आत्मिक–न्याय के बारे में शिक्षा देता है।

आइये हम एक और वचन योएल अध्याय 3 में पढ़े, और योएल 3 में हम देखेंगे कि कैसे वह प्रकाशितवाक्य 14 के समान है। योएल 3:13 में हम पढ़ते है :

हंसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ, दाख रौंदो, क्योंकि हौज़ भर गया है। रसकुण्ड उमण्डने लगे, क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है॥

रसकुण्ड भर गया है और रस उमण्ड रहा है क्योंकि उनकी दुष्टता बहुत बड़ी है। परमेश्वर की इस तस्वीर में न्याय के दिन करोड़ो लोगों को रसकुण्ड में उसके पाँवों के तले रौंदा जा रहा है। मसीह लोहे के राजदण्ड से राज्य कर रहे हैं, परन्तु यहाँ तस्वीर यह है मानों परमेश्वर ने उन सबको रसकुण्ड में डाला है, जिस प्रकार प्रभु यीशु को गतसमनी में पाँवो तले रौंदा गया था, और जैसे की कलीसियाओं को परमेश्वर ने पाँवों तले रौंदा था (स्मरण रखें कि हाथ और पाँव परमेश्वर की इच्छा का संकेत करते है)। इस प्रकार, पृथ्वी के सभी

उद्धार न पाए हुए लोग भी 'रसकुण्ड' में डाले और पाँवों तले कुचले और रौंदे जायेंगे। और जब वे परमेश्वर के क्रोध का अनुभव कर रहे हैं, तब क्या निकलता है? प्रकाशितवाक्य 14:20 में लिखा है :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

लैव्यव्यवस्था 17 बताती है कि ''लोहू में जीवन है।'' परमेश्वर उनमें से उनका जीवन निकाल रहे है, यह उन्हें मार डालेगा, और यह लोहू रसकुण्ड से निकलकर 'सौ कोस' तक बह गया। इस बात की पूरी संभावना है कि जब वे परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करते है, न्याय के दिन उनकी मृत्यु का कालखण्ड ''सौ कोस'' का होगा (यदि हमारी गणना सही है)।

यदि प्रभु चाहे, जब हम अगले अध्ययन के लिये फिर से मिलेंगे, हम पद 20 से कुछ बातों को देखेंगे। क्यों रसकुण्ड में दाख नगर के बाहर रौंदा जा रहा है? क्या हमारे पास सौ कोस (यह दूरी का नाप है) को समय में बदलने के लिये बाईबल सम्मत प्रमाण है? क्या हम सौ कोस को (1600 फर्लांग्स को) 1600 दिन के रूप में समझ सकते है? जब हम प्रकाशित वाक्य के 14 वे अध्याय के अध्ययन में वापस आएंगे तब हम अपने अगले अध्ययन में इन बातों पर विचार करेंगे।

Revelation 14 Series, Study #50 by Chris McCann, originally aired October 20, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 50, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 20 अक्तुबर 2014

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 50 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:20 पढेंगे :

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

हमने देखा कि रसकुण्ड परमेश्वर के क्रोध की तस्वीर दर्शाता है। परमेश्वर वास्तव में पद 19 में इनके बीच का संबंध बताते है, जहाँ यह लिखा है, ''परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रसकुण्ड में डाल दिया।'' इस प्रकार, रसकुण्ड परमेश्वर के क्रोध की तस्वीर है, उसमें पद

के आरम्भ में आगे लिखा है, ''और नगर के बाहर उस रसकुण्ड में दाख रौंदे गये।" आज के अध्ययन में हम इस पर विचार करेंगे। सबसे पहले हम यह विचार करेंगे कि 'रौंदे जाने' (trodden) का अर्थ क्या है और तब हम यह विचार करेंगे कि 'नगर के बाहर' दाख रौंदे जाने का अर्थ क्या है।

पाँवों के नीचे रौंदे जाने का विचार बाईबल के न्याय के विचार से बहुत मिलता है, जिसका आरम्भ कलीसियाओं से हुआ। उदाहरण के लिये जिस शब्द का अनुवाद 'रौंदना' किया गया है, वह लूका 21 में भी आया है, यह मत्ती 24 के समान्तर अध्याय है। लूका 21:22–24 में लिखा है :

क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएंगी। उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय, क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर बड़ी आपत्ति होगी। वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे, और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।

परमेश्वर यहाँ पर नए नियम की कलीसियाओं के प्रतीक के रूप में यरूशलेम की तस्वीर का उपयोग कर रहा है, और परमेश्वर कहते हैं – ''यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जायेगा'' और यहाँ जातियों के लिये जो मूल शब्द आया है, वह ग्रीक और इब्रानी दोनों भाषाओं में देशों (जातियों) को दर्शाता है। इस प्रकार, इस पद को इस प्रकार से पढ़ा जा सकता है – यरूशलेम को अन्य जातियों से रौंदा जायेगा, जब तक कि अन्य देशों (जातियों) का समय पूरा न हो जाये। परमेश्वर उस समय की चर्चा कर रहे है जब पवित्र नगर यरूशलेम को अन्य जातियाँ रौंद रही है, और इसका संबंध प्रकाशितवाक्य 11:2 से है:

और मन्दिर के बाहर का आंगन छोड़ दे; उस मत नाप, क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।

फिर एक बार, 'पवित्र नगर', वही तस्वीर है – अर्थात् यरूशलेम – और यह पवित्र नगर कलीसियाओं का प्रतीक है। इस प्रकार पवित्र नगर कलीसियाओं को दर्शाता है। परमेश्वर कहते हैं – ''और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेगी'' और 42 महीने सम्पूर्ण महाक्लेश की अवधि है, जो वास्तविक 23 वर्षों की थी। परन्तु कलीसियाएं अन्य जातियों को दे दी गई थी, और लूका 21:24 और प्रकाशितवाक्य 11:2 दोनों पदों में नगर को रौंदा जाता है। यहाँ 'पाँवों तले रौंदने' की चर्चा है, और यह परमेश्वर की इच्छा नहीं परन्तु अन्य जातियों की इच्छा या मनुष्यों की इच्छा को दर्शाता है। कलीसियाओं को परमेश्वर की इच्छा के आधीन होना चाहिये, परन्तु वे मनुष्यों के पाँवों तले (उनकी इच्छा के अनुसार) रौंदे जायेंगे – अर्थात् उद्धार न पाए हुओं की प्रत्येक इच्छा, अभिलाषा और चाहत के

आधीन जो शैतान के अधिपति के रूप में कलीसियाओं में प्रवेश करेंगे। वे अपने मन से अपनी इच्छा के अनुसार धर्मशिक्षाओं को बनाएंगे न कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार। और उनके द्वारा कलीसियाई जीवन कुचला जायेगा और नाश हो जायेगा, मानों वे 'पाँवों के तले' रौंदे जा रहे है। शैतान और उसकी सेनाएं (अन्य जातियाँ/देश) परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और संसार की कलीसियाओं और मण्डलियों पर आत्मिक विनाश का दण्ड लाने के लिये उपयोग किये जाएंगे।

परन्तु हमारी संदर्भ पद प्रकाशितवाक्या 14:20 में दाख रौंदने का कार्य 'नगर के बाहर' हो रहा है और 'नगर के भीतर' नहीं। वे जो रसकुण्ड में रौंदे जा रहे हैं वे नगर के बाहर रौंदे जा रहे हैं। आइये हम नये नियम में एक और स्थल देखे, प्रकाशितवाक्य अध्याय 19, हम इस पर बहुत बार विचार कर चुके हैं क्योंकि यहाँ 'रसकुण्ड' में रौंदे जाने का वर्णन है और यह अध्याय प्रभु यीशु ने उनकी सेना (समस्त चुने हुओं की मण्डली) के साथ संसार और शैतान के राज्य के विरूद्ध 'न्याय के दिन' में आने का वर्णन करता है। प्रकाशितवाक्य 19:15 में लिखा है :

और जाति जाति को मारने के लिये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।

न्याय के दिन परमेश्वर का यही कार्य मुख्य है, वे देश–देशों को या अन्य जातियों को बिल्कुल वैसा ही घात कर रहे है जैसे शैतान और उसके राज्य बेबीलोन (शैतान की तस्वीर बेबीलोन का दुष्ट राजा है), कलीसियाओं के विरूद्ध आये थे। जब महाक्लेश का काल समाप्त हुआ, परमेश्वर ने बाजी पलट दी, और वह अन्य जातियों के विरूद्ध आता है। पवित्र नगर अन्य जातियों को (रौंदने के लिये) दिया गया था, पर अब मसीह उन जातियों को मार रहे है। इस प्रकार की भाषा हमने बेबीलोन के संदर्भ में देखी थी। परमेश्वर ने पहले अपनी प्रजा – यूहदा को बेबीलोन वालों के आधीन कर दिया और सत्तर वर्ष की समाप्ति के बाद वे कहते हैं कि वे बेबीलोन के राजा और उस देश को दण्ड देंगे, जो उन सभी राष्ट्रों (जातियों) को दर्शाते है जिनमें पृथ्वी के सभी उद्धार न पाए हुए लोग है। वे एक रसकुण्ड में रौंदे जाने के लिये बंडल के रूप में बांधे गये है, और एक बार फिर कहूँ कि इसका सम्बन्ध 'सर्वशक्तिमान परमेश्वर' के क्रोध और जल–जलाहट से है।

मैं पुराने नियम में एक स्थल, यिर्मयाह अध्याय 25 को पढ़ना चाहता हूँ, यिर्मयाह अध्याय 25 में परमेश्वर की योजना बताई गई है कि वह अपने क्रोध का कटोरा पहिले उन्हें पीने देगा जो उसके नाम के कहलाते है (यह परमेश्वर के घर अर्थात् नये–नियम की कलीसियाओं पर दण्ड का संकेत है), और फिर क्रोध का वही कटोरा लेकर वह संसार की अन्य जातियों को पीने के लिये देगा। यह संसार के सभी उद्धार न पाये हुओं पर परमेश्वर के न्याय (दण्ड) की तस्वीर है। यिर्मयाह 25:29 में लिखा है :

देखो, जो नगर मेरा कहलाता है, मैं पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूंगा, फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहर के बचोगे? तुम निर्दोष ठहर के न बचोगे, क्योंकि मैं पृथ्वी के सब रहने वालों पर तलवार चलाने पर हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी हे।

यह मानो, परमेश्वर पृथ्वी पर शेष बचे लोगों से कह रहे है, क्योंकि उन्होंने उसके नाम से बुलाए जाने वालों पर विपत्ती लाना आरंभ किया है। तब वे आगे यिर्मयाह 25:29–30 में कहते है :

देखो, जो नगर मेरा कहलाता है, मैं पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूंगा, फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहर के बचोगे? तुम निर्दोष ठहर के न बचोगे, क्योंकि मैं पृथ्वी के सब रहने वालों पर तलवार चलाने पर हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी हे। इतनी बातें भविष्यद्वाणी की रीति पर उन से कहकर यह भी कहना, यहोवा ऊपर से गरजेगा, और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा; वह अपनी चराई के स्थान के विरुद्ध जोर से गरजेगा; वह पृथ्वी के सारे निवासियों के विरद्ध भी दाख लताड़ने वालों की नाईं ललकारेगा।

यह भी एक पद है जो दर्शाती है कि न्याय के दिन में परमेश्वर के लोगो को भविष्यद्वाणी करनी होगी, जैसा कि यिर्मयाह 50:2 और प्रकाशितवाक्य 10:11 में वर्णन है। जैसे प्रभु 'हँसिये' को फसल काटने भेजते हैं, वैसे ही वे अपने लोगों को न्याय के संदेश के साथ भेजते हैं कि वे घोषणा करे और जो भी संसार में है, उसको सुने। इससे दोहरा उद्देश्य पूरा होगा – भेड़ों को पोषण मिलेगा और बेबीलोन के पतन एवं संसार पर परमेश्वर के न्याय की घोषणा होगी।

तब आगे यिर्मयाह 25:30 में लिखा है :

इतनी बातें भविष्यद्वाणी की रीति पर उन से कहकर यह भी कहना, यहोवा ऊपर से गरजेगा, और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा; वह अपनी चराई के स्थान के विरुद्ध जोर से गरजेगा; वह पृथ्वी के सारे निवासियों के विरद्ध भी दाख लताड़ने वालों की नाईं ललकारेगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि परमेश्वर स्वयं की तस्वीर इस प्रकार की दिखा रहे हैं कि वे गरज रहे हैं, और 'वह पृथ्वी' के सारे निवासियों के विरूद्ध भी दाख लताडने वालों के समान ललकारेगा – यह वर्णन प्रकाशितवाक्य 14 से बहुत मेल खाता है जिसमें संकेत है कि वह पृथ्वी की कटनी का समय है, वह समय जिसमें फसल काटी जाती है और यह परमेश्वर के क्रोध का समय है, जब परमेश्वर उद्धार न पाये हुओं को दण्ड दे रहे हैं। वे यह काम आत्मिक रीति पर कर रहे हैं परंतु वे इसे अति वास्तविक रूप में कर रहे हैं।

उद्धार न पाये हुये लोग परमेश्वर के क्रोध के आधीन है और इन बातों की घोषणा की जानी है। दाख का रौंदा जाना पृथ्वी के सभी निवासियों के विरूद्ध है। ये लोग कलीसियाओं के भीतर कपटी/पाखण्डी लोग ही नहीं है परन्तु ये समस्त पृथ्वी के उद्धार न पाये हुए लोग है और जब हम "पृथ्वी के सारे निवासी" यह भाषा पढ़ते हैं, तब परमेश्वर का विचार समस्त मानवजाति के अंतिम न्याय पर केन्द्रित है। बदलाव के इस पद को स्मरण रखें, जो यिर्मयाह 25:30 के साथ सदृश रखती है। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 8 की अंतिम पद में पृथ्वी के न्याय का उल्लेख है, उस अध्याय में परमेश्वर 'एक तिहाई' पर दण्ड का वर्णन कर रहे है और यह 'एक तिहाई' कलीसियाओं को दर्शाती है, और तब यह बदलाव का पद है – प्रकाशितवाक्य 8:13 में लिखा है :

और जब मैं ने फिर देखा, तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण जिन का फूंकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहने वालों पर हाय! हाय! हाय!

तब प्रकाशितवाक्य 9 का आरम्भ 'हाय' के वर्णन के साथ होता है, अंतिम तीन तुरहियाँ पृथ्वी के सभी रहने वालों के विरूद्ध फूंकी जाती है। यह कटनी का समय है, दाख के दाँवने अर्थात् पैरों तले रौंदने और उनमें से जीवन को निकालने का समय है। यही बात प्रकाशितवाक्य 14 अध्याय की अंतिम पद में भी कही गई है।

आइये हम इस पर भी विचार करे कि "नगर के बाहर" क्या हो रहा है। मैं आपके लिये इस पद का पहला भाग पढ़ता हूँ – प्रकाशितवाक्य 14:20

और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए, और रस कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया॥

रसकुण्ड नगर के भीतर नहीं है। स्मरण करे जब हम दख की बारी के विषय में पढ़ रहे थे जिसे परमेश्वर ने स्वयं लगाया, तब कहा गया था कि रसकुण्ड दाख की बारी के भीतर बनाया गया था। परमेश्वर ने वह तस्वीर इस विचार के साथ दी थी कि पवित्र नगर यरूशलेम पाँवों तले रौंदा जायेगा – परन्तु यहाँ दूसरी भाषा है – रसकुण्ड नगर के बाहर है। सबसे पहले हमें स्मरण आता है कि पवित्रशास्त्र हमें प्रभु यीशु मसीह के न्याय (क्रूस) के विषय में इब्रानियों 13:11–13 में क्या बताता है :

क्योंकि जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप-बलि के लिये पवित्र स्थान में ले जाता है, उन की देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुख उठाया। सो आओ उस की निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें।

अब यह अंतिम पद एक ओर कलीसियाओं से बाहर निकल आने से संबंधित है, और इसके अन्य आत्मिक अर्थ भी लगाये जा सकते हैं, परन्तु हम पद 11 और पद 12 में पढ़ सकते हैं कि 'मसीह' ने 'नगर के बाहर' दुख उठाया। बलि पशुओं की देह, 'छावनी के बाहर' जलाई जाती थी, और यह संकेत है कि परमेश्वर का क्रोध 'फाटक से बाहर' वालों पर है या उन पर जो 'छावनी के बाहर' है। परमेश्वर का क्रोध उन पर बना हुआ है। यह दण्ड का स्थान है, क्योंकि परमेश्वर ने प्रभु को दण्ड दिया, जब वह परमेश्वर के क्रोध को दूसरी बार सह रहा था, और उसने 'फाटक के बाहर' उसे सहा, क्योंकि वही वह स्थान है जहाँ उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था। वह पाप का दाम नहीं चुका रहा था, परन्तु यह व्यवस्था के अनुसार दण्ड था जो वह सह रहा था, और इसलिए वह परमेश्वर के क्रोध को सह रहा था और वेदना में था। इसका अर्थ यह हुआ कि 'नगर के बाहर' परमेश्वर के क्रोध का स्थान है।

प्रकाशितवाक्य 22 में हम देखेंगे कि किस नगर की बात की गयी है। इसका संदर्भ वह कथन है – जिसमें प्रभु ने कहा था – ''जो अन्याय करता है वह अन्याय ही करता रहे और जो मलिन है वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहें।" इस पद का संबंध हमारे वर्तमान समय से है जिसमें सभी की आत्मिक दशा जैसी है वैसी स्थिर रहेगी और उसमें परिवर्तन नहीं होगा, क्योंकि उन सब चुने हुओ का उद्धार करने के बाद जिनके नाम मेम्नें की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं, परमेश्वर ने 'स्वर्ग का द्वार' बन्द किया और उद्धार देने की उनकी योजना का समापन किया, क्योंकि उन सबका उद्धार हो चुका है। वे ही धर्मी और पवित्र हैं जो आगे भी धर्मी और पवित्र बने रहेंगे। शेष सभी अन्याय करने वाले और मलिन लोग, जो उनके पापों में पाये गये, और अब उनके उद्धार का कोई उपाय नहीं है। उनके लिये कोई आशा नहीं है क्योंकि न्याय के दिन किसी के लिये भी दया नहीं की जायेगी, क्योंकि परमेश्वर ने सभी उद्धार पाने वालों को पहले से ही चुना था और उसने हर एक पर छुटकारे का कार्य लागू किया और अब कोई बचा हुआ नही है। यही कारण है कि बाईबल में लिखा है कि न्याय के दिन पुस्तकें खोली गई। यह ऐसा है मानों परमेश्वर मेम्नें की जीवन की पुस्तक खोलते हैं और उसमें नामों को खोजते हैं, मेम्ने का जीवन की पुस्तक में यह खोज बड़ी गम्भीरता और बारीकी से की गई, और परमेश्वर उसमें उद्धार न पाये हुओं के नाम नहीं पाते, एक के भी नहीं जिन्हें उद्धार पाने के लिये चुना गया हो। वे सब जिनके नाम उसमें लिखे थे उन्हें पा लिया गया। इस्राएल के घराने की सभी खोई हुई भेंड़ें खोज ली गई और गल्ले में मिला दी गई थी, इस कारण भेड़ों को खोजने का काम समाप्त हो चुका है। संसार में जाने और परमेश्वर के वचन के सुसमाचार की उद्घोषणा करने की अब कोई आवश्यकता नही है कि उन भेड़ों को खोजा जा सके, जो पहले ही आत्मिक–इस्राएल का अंग है, और उनमें शामिल थी जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार पाने के लिये पहले से चुन लिया था। निश्चय ही केवल परमेश्वर जानते है कि वे कौन लोग है, और वे ही सुनिश्चित करते हैं कि उनमें से प्रत्येक सुसमाचार सुन ले और उद्धार प्राप्त करे, इसके पहले कि परमेश्वर सब बातों का अंत करे, और स्वर्ग का द्वार बन्द करे।

इस संदर्भ में, हम प्रकाशितवाक्य 22:14 में पढ़ते है :

धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे।

''अपने वस्त्र धो लेने और जीवन के वृक्ष के पास आने का अधिकार पाने'' का एकमात्र तरीका है कि व्यक्ति सबसे पहले उद्धार को प्राप्त करे और परमेश्वर से एक नया हृदय और एक नयी आत्मा प्राप्त करे ताकि उसमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की सिद्ध इच्छा और कार्य को सच्चे हृदय से करने की सिद्ध योग्यता आ सके। परमेश्वर ने जिसका उद्धार किया हैं, उसके स्वभाव में ये बातें आती है। उनके नये हृदय और नयी आत्मा में सिद्धता, और पवित्रता और धार्मिकता होती है ताकि सदैव परमेश्वर की इच्छा को पूरा करे, और उनमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की इच्छा भी होती है। इस कारण, वे सच्चे हृदय से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और निश्चय ही जिनके पास ऐसा हृदय नहीं है उनका उद्धार नहीं हुआ है; उनके हृदय अत्याधिक दुष्ट है और सब बातों से बढ़कर धोका देने वाले है, और उनमें से सब प्रकार की अधार्मिकता बाहर निकलती रहती है।

मूल रूप में हम प्रकाशितवाक्य 22:14 के सार में कह सकते हैं कि जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया है (चुने हुये), उन पर मसीह का लोहू 'जूफे' के द्वारा जो परमेश्वर का वचन है, लगा दिया गया है, और उन्हें सारे अधर्म से और उनकी सभी अशुद्धता से उन्हें शुद्ध कर दिया गया है और ये वे है जो – ''फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे'', उस यरूशलेम में जो स्वर्गीय नगर है, जहाँ हमारी नागरिकता है और जहाँ हम प्रभु यीशु मसीह में होकर निवास करते है। स्मरण करे, बाईबल में लिखा है कि हम 'मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में बैठाये गये है'। यद्यपि जिस क्षण हम उद्धार को प्राप्त करते है, यह कथन हमारे लिये सत्य और सही ठहर जाता है, परन्तु हमारी शारिरीक देह पृथ्वी पर ही रहती है। परमेश्वर प्रत्येक उद्धार पाने वाले को स्वर्ग के यरूशलेम के निवासी और परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में देखते हैं, या ऐसे व्यक्ति के रूप में जो फाटकों से होकर उस नगर में आया है। जब हम 'फाटकों' से नगर में प्रवेश करने की भाषा सुनते हैं, तब यह मत्ती के 25 अध्याय में दुल्हे के आने से जुड़ी बातों के साथ सादृश्य रखने वाली शिक्षा है। मत्ती 25:10 में यह लिखा है :

जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चलीं गई और द्वार बन्द किया गया।

स्मरण करे कि यशायाह 26:20 में क्या लिखा है :

हे मेरे लोगों, आओ, अपनी अपनी कोठरी में प्रवेश कर के किवाड़ों को बन्द करो; थोड़ी देर तक जब तक क्रोध शान्त न हो तब तक अपने को छिपा रखो।

तब परमेश्वर कहते हैं कि वे पृथ्वी के रहने वालों को अर्थात् उद्धार न पाए लोगों को दण्ड देने के लिये निकलेंगे, परन्तु फिर भी परमेश्वर के लोगों की रक्षा की जायेगी। वे प्रभु यीशु मसीह के साथ सुरक्षित कक्ष में रहेंगे, जब विवाह का भोज दिया जायेगा, तब परमेश्वर के क्रोध का समय है और उद्धार न पाये हुये दण्ड पाते रहेंगे, जब तक कि विवाह का भोज समाप्त न हो और सभी उद्धार न पाये हुओं का आत्मिक–विनाश पूरा न हो जाये। तब परमेश्वर शाब्दिक अर्थों में संसार और उसके उद्धार न पाये निवासियों का नाश करेगा और एक नयी पृथ्वी और एक नये स्वर्ग का सृजन करेगा। परमेश्वर के लोग जो मसीह के साथ सुरक्षित कक्ष में होगे, वे स्वर्ग पर उठा लिये जायेंगे, उन्हें उनकी नयी आत्माओं के अनुरूप एक नयी पुनरूत्थान प्राप्त देह दी जायेगी। तब वे एक अलग अर्थ में 'नगर में प्रवेश' करेंगे, पर बाईबल के अनुसार परमेश्वर के चुने हुये पहले ही उस नगर में जा चुके है।

तब प्रकाशितवाक्य 22 की अगली पद हमें बताती है कि हम कैसे जान सकते हैं कि यह अभी वर्तमान में हो रहा है, क्योंकि प्रकाशितवाक्य 22:15 में यह कहा गया है :

पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहने वाला, और गढ़ने वाला बाहर रहेगा॥

यहाँ लोगों का वर्णन है – टोन्हा कौन है? वह जो स्वयं को जादू टोने या ऐसी बातों में लिप्त करता है, व्याभिचारी कौन है? – वह जो स्वयं को वासना और व्याभिचार और कामुकता में लिप्त करता है, हत्यारा कौन है? – वह जो दूसरे मनुष्य की हत्या करता है, मूर्ति पूजक कौन है? – वह व्यक्ति जो अन्य देवी–देवताओं के समाने झुकता है, झूठ का चाहने वाला और गढ़ने वाला कौन है? वह मनुष्य ही है। ये सभी बातें उन लोगों पर लागू होती है जिसका उद्धार नहीं हुआ है और वे अब भी उन पापों में लिप्त है। वे 'नगर के बाहर' है। पर यह कैसे हो सकता है? नगर के बाहर यह कौन सा स्थान है, जिसमें वे हैं? बीतें समय में कुछ ऐसे धर्मपंडित होकर गए जिन्होंने सिखाया कि वे "नरक" कहलानेवाली किसी जगह में है, जबकि परमेश्वर के चुने हुए लोग स्वर्ग में है। परंतु हम सिख चुके है कि "नरक" नाम की कोई जगह नही है। और इसलिए यह झुठें, हत्यारें, व्यभिचारी और मुर्तिपूजक पृथ्वी पर है, क्योंकि वे नगर के बाहर है। वे पृथ्वी पर नही है। यह केवल न्याय के दिन संभव है और अब हम यह समझ गये हैं कि न्याय का दिन एक लम्बा चलने वाला समय है, जो पृथ्वी पर प्रगट हो रहा है और परमेश्वर के लोग भी ठीक (इसी काल में) यहाँ पृथ्वी पर है। वे नगर के भीतर आत्मिक रीति से 'सुरक्षित' है, परन्तु 'नगर के बाहर' वे सब उद्धार न पाये हुये लोग हैं जो परमेश्वर के राज्य के बाहर है।